एक ओंकार (ੴ) सतिगुरु प्रसादि ॥

इतिहास गुरू खालसा (पंथ) अठाहरवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी के मध्य तक

व

स्वन्त्रता का सिक्ख संग्राम

अथवा

सिक्ख इतिहास भाग द्वितीय

www.sikhworld.info
E-mail: info@sikhworld.info
&
jasbirsikhworldinfo@gmail.com

क्रांतिकारी जगद्गुरु नानक चेरीटेबल

लेखकः
जसबीर सिंघ
फोनः 0172-21696891
मो. 99881-60484

द्वितीय-अंश 13

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

आन्दोलन बब्बर अकाली

सिक्ख इतिहास, भाग-दूसरा

लेखक : स. जसबीर सिंघ

क्रांतिकारी गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़
Website : www.sikhworld.info

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

विषय – सूची

क्रमसंख्या	शीर्षक	पृष्ठसंख्या
1.	बब्बर अकाली आन्दोलन	
2.	अकाली आंदोलन व कृपाण	

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बब्बर अकाली आन्दोलन

सिख कौम की हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र करवाने की महान देन है। सिखों ने हिन्दुस्तान को आजाद करवाने के सौंघर्ष में सब से अधिक कुर्बानियाँ दी, फॉसियों के तख्तों को चूमा, काले पानी की सजाये काटीं, जेलों में गये और अन्य कष्ट सहारे। पर हिन्दुस्तान की आजादी के पश्चात् इतिहास में सिख कौम की कुर्बानीयों को कोई स्थान नहीं दिया गया बल्कि सिख आँदोलनों को विशुद्ध धार्मिक आंदोलन कह कर छुटियाने का प्रयास किये गये।

ऐसे ही आंदोलन में से बब्बर अकाली आंदोलन एक ऐसा जबरदस्त आंदोलन था जिस से भारत की अंग्रेज सरकार तो घबराती ही थी, लंदन बैठे अंग्रेज हाकिम भी भयभीत हुए पड़े थे। पर यदि हम हिंदुस्तान की आजादी की इतिहास को पढ़ें तो उस में बब्बर अकाली शूरवीरों का कही वर्णन तक नहीं आता। यदि कहीं है भी, तो केवल दो चार पंक्तियों में लिख कर औपचारिकता निभायी गयी है।

इस आंदोलन के अधिकतर सदस्य दुआबे (सतलुज ब्यास के बीच के क्षेत्र) के थे। सारा जोर लगाने के बावजूद भी अंग्रेज सरकार दुआबे में अपना दबदबा नहीं बैठा पायी थी। इस का प्रमाण इस बात से मिलता है कि 1923 में ब्रिटिश पार्लियामैंट के वजीर हिंद ने जब एक प्रश्न के उत्तर में यह कहा कि दुआबे की स्थानीय मशीनरी नकारा हो चुकी है तो एक सदस्य ने कहा कि ब्रिटेन की हुकुमत से ये दोनों जिले (जलंधर तथा होशियारपुर) नियंत्रण में नहीं आयेगें व्यर्थ अपने वफादारों की जाने न गंवाओं और सारा दुआबा किसी देसी रियासत के साथ मिला दो।

हिन्दुस्तानीयों के गले से अंग्रेजी सत्ता का भार उतारने के लिए यह आंदोलन सिख सतगुरुओं के जीवन तथा कार्यक्रम से अगवाई ले कर आरम्भ किया गया था। बब्बरों पर चल रहे मुकदमें की कारवाई दौरान उन (बब्बरों) ने अपने कामों का लेखा जोखा इस प्रकार दिया जो "मार्च 1925 की अकाली प्रदेशी अखबार में छपा....." हमने जो कुछ किया है अपनी जान बचाने के लिए नहीं किया, हमने पंथ के शत्रुओं विरोधीयों तथा दोषीयों का सुधार किया है हमारे भाई शांतिमय युद्ध कर रहे थे, हमने श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी वाला युद्ध किया है। हमने कोई सिख धर्म के विपरीत बात नहीं की है। जब हमारे गुरु साहिबान ने जान के प्रवाह नहीं की जो सच्चे शाहिनशाह दो जहानों के वाली थे, तब हमें मौत की क्या प्रवाह हो सकती है.....?"

बब्बर अकाली ही थे जो हँसते हँसते फांसी पर चढ़ गये । एक अकेला बब्बर, कई हजारों गौरे सिपाहियों की मौजूदगी में शूरवीरता से लड़ कर शहीदियां पा गया।

यदि उन्होंने जिंदा जी हाथ न आने का प्रण किया तो उसे निभाते हुए जाने न्योछावर कर गये और ऐसे समय पुरातन इतिहास को ताजा कर गये जब लोग कहने लगे थे कि यह कैसे हो सकता है कि मुट्ठी भर सिखों ने मुगल सेना का सामना किया हो।

इस आन्दोलन के बारे में विस्तार में जाने से पूर्व यह अच्छा होगा कि इसकी पृष्ठभूमि का अवलोकन कर लिया जाय।

पृष्ठभूमि : गुरद्वारा सुधार आंदोलन के दौरान ननकाण साहिब के कांड तथा गुरु के बाग के मोर्चे आदि ऐसी ऐतिहासिक घटनांए थी जिन्होंने बब्बरों को हथियार उठाने पर मजबूर कर दिया । हां, इन के बदले की ज्वाला तो काफी पहले से ही सुलग रही थी। उनके प्रचंड जज्बातों को भड़काने वाले मुख्य कारण धार्मिक, आर्थिक तथा राजसी थे।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अंग्रेजों ने कुछ नीतियों द्वारा डोगरों के द्वारा सिख राज्य हथिया लिया तो पंजाब मे पहली बार अंग्रेजों के विरूद्ध सन् 1871 में नामधारियों ने पूर्ण निर्भयता तथा शूरवीरता से सिखी स्वाभिमान को प्रगट किया। अंग्रेजों ने आम लोगों के साथ तालमेल बनाने के लिए तथा जनता के रोष को दबाने के लिए सन् 1885 में कांग्रेस की नींव रखी। दूसरी ओर आम जनता की व्यवहारिक तथा आर्थिक दशा बहुत बुरी होती गयी। विशेष तौर पर पंजाब के किसानों जिन्होंने कभी जमीन रहन नहीं रखी थी, 1878 में सारी जमीन गहने रखे चुके रखे थे। 1919 में मालिक किसानें में से 83 % किसान शाहूकारों के चुँगल में फंसे हुए थे। शहरी आबादी वाला कानून जो 1905 – 07 में लागू हुआ, उससे तो किसानों की कमर ही टूट गयी। इसके रोष में गद्दर आंदोलन उठा, पर वह दबा दिया गया।

1911 में अंग्रेज सरकार ने कलकत्ता को छोड़ कर दिल्ली को राजधानी बनाने का फैसला किया तथा राजधानी के निर्माण के लिए गुरद्वारा रकाब गंज की एक दीवार गिरा दी गयी तो सिख जनता में रोष की एक तकड़ी लहर दौड़ गयी।

1914 में कामगाटा मारू जहाज के कैनेडा से वापिस आ रहे बहुत निर्दोश से सिख मुसाफिरों को बजबज घाट पर का शिकार बनाया । जनता में रोष तो जागृत हुआ परंतु वह शनैः शनैः ठंडा पड़ गया। पहला विश्व युद्ध समाप्त हुआ तो सिख सैनिकों को बहादुरी का इनाम यह मिला कि बहुतों को नौकरी से छुट्टी के दे कर घरों में भेज दिया गया। वापिस आये सैनिक भाइयों ने किसान भाईयों को अंग्रेजी हूकूमत के अत्याचारों का शिकार होते देखा। 1919 को बैसाखी के त्यौहार पर तथा जलियांवाले बाग में इकट्ठे हुए लोगों पर बिना किसी कारण के अंग्रेज़ी शासन द्वारा खूनी कांड हुआ।

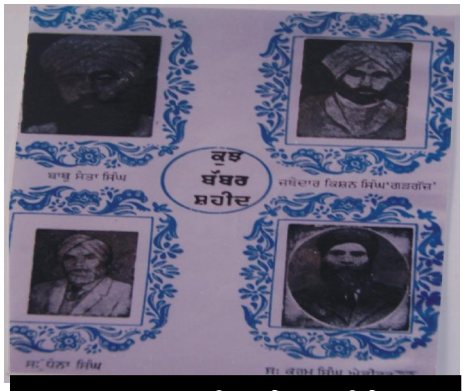

मुख्य बब्बर अकाली आन्दोलनकारी नेता

उस के जिम्मेवार जनरल डायर को सजा की जगह पर प्रशंसा मिलने पर और हरिमंदर साहिब में उसको सिख बनाने का जो हास्यास्पद नाटक अंग्रेजों द्वारा किया गया, उससे सिख जनता में गुस्से की लहर दौड़ गयी।

आर्थिक दुर्दशा, धर्म स्थानों के हो रहे अनादर तथा स्वाभिमान को किया गया चैलेंज सिंघ कब तक सहन कर सकते थे? सिख जज्बात तो सिंघ लहर ने कूट – कूट कर भर दिये थे और सोने पर सोहागे का काम मई 1920 में लाहौर से जारी हुए "अकाली अखबार" ने किया जिसके निधड़क लेखों ने कौम का जगा दिया। 5 अक्तूबर 1920 को गुरद्वारा बाबे की बेर स्यालकोट को मंहतों से आजाद करा लिया गया और स्थानीय कमेटी बन गयी। 12 अक्तूबर 1920 को अकालतख्त साहिब और दरबार साहिब अमृतसर पर आम सिख जनता ने महंत हटा कर कमेटी बना दी । 15 – 16 नबम्बर 1920 को भारी पथंक सम्मिलेन हुआ तथा शिरोमणी गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी बन गयी और 14 दिसम्बर को शिरोमणी अकाली दल भी अस्तित्व में आ गया। अंत में दिसम्बर 1920 तथा जनवरी 1921 के पहले हफतों तक गुरद्वारा सुधार के लिए अकाली आंदोलन पूर्ण शांतिपूर्ण सत्यग्रह के अनुसार चलता रहा और कई गुरद्वारों को महंतो से आजाद करवा कर पंथक प्रबंध में लिया गया ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अंग्रेज सरकार कदाचित नहीं चाहती थी कि सिख जागरू हो ओर धर्म स्थानों पर किसी श्रेणी का प्रबन्ध हो। वह तो अपना स्वतंत्र प्रबंध चाहती थी और अपने वफादारों को ही गुरद्वारा पर काबिज रखना पसंद करती थी। इस मनसूबे के अंतर्गत उसने महंतों की पीठ ठोकनी शुरु कर दी और सिख जनता के पढ़े लिखे वर्ग में से उठ कर लीडरों को रियासते दे कर भ्रमित करना शुरु कर दिया उसके भयँकर परिणाम सामने आये।

26 जनवरी को गुरद्वारा तरतारन साहिब के पुजारियों तथा महंतों को सुधार करने के लिए अकाली जत्थे पहुचे तो उन्होंने बहुत प्रेम से गुरद्वारा प्रबंध सुधारने तथा बातचीत द्वारा फैसला करने की कोशिश की। वहां के ग्रंथियो, पुजारियों ने रात के समय शातिपूर्ण अकालियों पर कातिलाना हमले किये। परिणाम स्वरूप 17 अकाली बुरी तरह घायल हुए तथा उनमें से दो शहीद हो गये। गुरद्वारे को पुजारी आदि तो छोड़ गये पर सिखों के मनों में एक झरनाहट सी दौड़ गयी। 21 फरवरी 1921 को ननकाण साहिब का कांड हुआ जिसमें सौ से अधिक सिखों ने शहीदियां प्राप्त की और जब सिखों के बदला लेने के जोश को रोका न जा सका तो गुरद्वारा ननकाणा साहिब का प्रबंध सिखों के हवाले कर दिया गया। यहां आ कर अंग्रेज सरकार की साजिश नंगी हो गयी। आम लोग सोचने लग गये थे कि यह अकेले महंत की साजिश नहीं हो सकती इसके पीछें सरकारी आधिकारियों का हाथ अवश्य है। (अब यह प्रकाश हो चुका है कि मिस्टर किंग जो कि उस समय का कामिशनर था) ने एक गुप्त पत्र लाहौर के गोली सिक्का डीलरों को भेजा कि महंतों को गोली सिक्का दिया जाय) बब्बर अकाली लहर, इस तीखे साम – राज्यवाद के विरोधी जज्बे का चमत्कार थी। बब्बर अकाली बधु शांति के सिद्धांत की सफलता के कतई घायल नहीं थे क्योंकि गुरु आशय के अनुसार वे जानते थे कि शांतिपूर्ण रहने की भी एक सीमा होती है। उससे आगे शस्त्रों का प्रयोग करना धर्म बन जाता है। इसलिए उन्होंने ज़बर का सामना हथयारबंद होकर कर ने सिद्धांत को अपनाया तथा प्रचारित किया।

आंदोलन का आरंभ : दिनांक 19, 20, 21 मार्च 1921 को होशियारपुर में सिख ऐजुकेशनल कानफैंस हुई। इस समय कुछ गर्म विचारों के सिख अलग अलग एकत्र हुए जिन्होंने ननकाणा साहिब के कांड के जिम्मेवार महंत तथा सरकारी हाकिमों को तथा सरकार के पिटठुओं को ठीक करने का फैसला किया। सब से पहले मिस्टर बाउरिंग सुपरिंटेडेंट पुलिस के कत्ल करने की ड्यूटी बेला सिंघ तथा गंडा सिंघ की लगी। तोता सिंघ पेशावरी ने सूबा सरहिंद से कुछ हथियार तथा बंब प्राप्त किये। सात रीवाल्वर अंबाला छावनी के असलारवाने के उठाये या छीने गये। 23 मई को ये दोनों लाहौर में उसके बंगले पर गये, पर पकड़े गये, और उन्होंने पुलिस के पास बाउरिंग के कत्ल करने की साजिश के बारे में साफ साफ इकबाल कर दिया। उन पर मुकदमा चला और एक वर्ष के पश्चात तोता सिंघ को पांच वर्ष, तथा गंडा सिंघ को तीन साल की सजी हुई । किशन सिंघ, मास्टर तोता सिंघ आदि चार अन्य सिंघों के वारट निकले पर ये सब फरार हो गये।

जब मई 1921 में सरदार किशन सिंघ के वारंट निकले तो उन्होंने यह साफ जाहिर पर दिया कि अंग्रेज हकूमत का कोई ईमान तथा इखलाक नहीं। यह धोखे फरेब में माहिर हैं, निहत्थों पर जुल्म अत्याचार करती है, इससे शांति की लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती चाहे उस समय शिरोमणी कमेटी ने यह प्रस्ताव पास करके यह ऐलान कर दिया था कि कोई सिख हाथ न उठाये, वारंट निकलने पर खुफिया रह कर काम न करे बल्कि अदालत में पेश हो और सख्तियों को शांति से सहन करे। उन्होंने शिरोमणी कमेटी के इस निर्णय को मानने से इन्कार कर दिया और फैसला किया कि पुलिस के हाथ न आया जाय और बाहर रह कर हकूमत के विरूद्ध प्रचार आरंभ कर दिया।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जत्थेदार किशन सिंघ बड़िंग, जिला जलंधर का निवासी था और सिख पल्टन का हवलदार मेंजर था। पजांब में मार्शल ला लगने तथा अत्याचार होने पर आपने पल्टन में ही सरकार के विरूद्ध प्रचार आरम्भ कर दिया। कोर्ट मार्शल हुआ तो आप ने नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। उस समय आप को पदोन्नति मिलने वाली थी और आप जमांदार होने वाले थे। कई अधिकारियों ने आप को समझाया पर आपने उन में भी नौकरी छोड़ देने का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। अंत में आपको डिसचार्ज कर दिया गया। और पैनशन लग गयी। आप ने सारी उम्र एक बार भी पैनशन वसूल नहीं की। 1920 में आप अकाली जत्थों में शामिल हो कर काम करने लग गये। आप इतने धड़ल्लेदार तथा प्रभावशाली थे कि इन को शिरोमणी अकाली दल का जनरल सैकटरी चुन लिया गया। जत्थेदार किश्न सिंघ जी का कथन था कि मैं तब तक ही शांतिपूर्ण अकाली हूँ जब तक मेरे वारंट नहीं निकलते। जहां कहीं अकाली जुड़ के बैठे होते, यह अचानक प्रगट हो जाते, गातरे की कृपाण निकालकर भरपूर तशदद के लिए तकरीर करके स्वयं अलोप हो जाते। वारंट निकलने पर जब आप पुलिस के हाथ ने आये और शिरोमणि कमेटी तथा अकाली दल का व्यवहार इन के मन को नहीं भाया तो इन्होंने कुछ नवीन कार्यक्रम व योजनाऐं बनायी।

जून 1921 में किशन सिंघ ने मालवा में चुने हुए मित्रों तथा हमदर्दों के साथ विचार करके पक्का इरादा बना लिया कि हथियार उठा कर हकूमत का सामना किया जाय। आप ने कहा कि दुश्मन के साथ शांति का क्या अर्थ है। गुरु साहिबान ने भी पहले शांतिपूर्ण शहीदियाँ दी थी। उसका जनता पर प्रभाव पड़ा था। पर वैरी पर कोई असर नहीं हुआ था। इसलिए अतंतः तलवार उठानी पड़ी।

अपने दिमाग में हथियारबंद बगावत का नक्शा बना कर आप ने निमाणी के मेले पर मस्तूआणा रियासत जींद में पहली तकरीर की। जब आप गुरु गोबिंद सिंघ जी रचित जफरनामें में पंक्तियां पढ़ कर उन के अर्थ करके बताने लगे कि "जब और सारे साधन समाप्त हो जाये तो दुश्मन के विरूद्ध तलवार उठाना सिखों का धार्मिक कर्तव्य है" तो दीवान के प्रधान ने आप को आगे बोलने से रोक दिया। इसके पश्चात आप दुआबा में वापिस आ गये।

अक्तूबर 1921 के आरंभ में किश्न सिंघ, संत करतार सिंघ प्रागपुरी को, हरदासपुर तहसील फगवाड़ा में मिले और उनको सारी स्कीम समझाई। वहां जलसे में किशन सिंघ ने अकाली दल का प्रचार किया। यहाँ पर ही सिख पल्टन के एक क्लर्क, बाबू संता सिंघ ने किश्न सिंघ को कहा कि वह फौज की नौकरी न छोड़े। फौज के अंदर की बागवात का प्रचार करे और समय आने पर ही नाम कटाये। इस प्रकार स्थान – स्थान पर प्रचार करने का परिणाम यह निकला कि नवम्बर 1921 में रूड़का कलां, जिला जलंधर में सम्मेलन करके आगे के लिए प्रचार को एक प्रबंध में ढाला गया और एक नवीन 'चक्रवर्ती जत्था बनाने का एलान किया गया।

बागीयाना प्रचार : नवम्बर 1921 की इस मीटिंग के पश्चात चक्रवर्ती जत्थे ने लगभग सारे दुआबे में प्रचार की बाढ़ बहा दी।इन के प्रचार का तारीका बहुत फुर्तीला था। तीन चार घंट लगा कर एक गांव मे प्रचार करते वहां से गायब हो जाते तथा अगले गांव जा डेरा लगाते। वहां पर प्रचार करके तीसरे गांव में आराम करते और वहां से भी सुबह शाम फिर निकल पड़ते। इन सारे प्रचारकों के पीछे पुलिस लगी रहती थी। सब के वारंट निकल चुके थे, पर यह सब जत्थे की हिदायतों के अनुसार पुलिस के हाथ नहीं आते थे और दिन रात एक करके प्रचार में डटे रहते थे।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पुलिस भी इतनी जल्दी किसी पर हाथ नहीं डालती थी क्योंकि बब्बरों ने साफ ऐलान किया था कि जिस ने हाथ डालना हो, जरा तगड़ा होकर आये और फिर बाल बच्चे का मुंह देखने की आशा न करे। चक्रवर्ती जत्थे के प्रचारकों ने सब से पहले "दून" के इलाके का दौरा किया जहां न तो अभी तक कांग्रेसी पहुंचे थे और न ही अकाली। जब इन्होंने राजसी प्रचार किया तो लोगों में से, जिन्होंने पहली बार ऐसा प्रचार सुना था, अकाली दल तथा कांग्रेस के पांच हजार मैंबर बन गये। इस से कांग्रेस तथा अकाली दल के लीडर प्रभावित हुए और उन्होंने चक्रवर्तियों का विरोध छोड़ दिया और ठीक समझने लगे कि ग्रिफतारी न देना तथा बाहर रह कर काम करना काफी दर्जे अच्छा हैं।

बब्बरों द्वारा गांवों में बागीआना प्रचार आंरभ हो चुका था। जहाँ हकूमत के विरूद्ध शांति के फुसफुसे फलसफे के प्रचारकों के दीवानों में मामूली हाजरी होती थी, वहाँ बब्बरों के दीवान में गहिमा गहम होने लगी। लोगों में हकूमत के विरुद्ध नफरत और जोश दिनों दिन बढ़ने लगा। हकूमत ने इस प्रचार को रोकने के लिए पहला कदम प्रचारकों के वांरट जारी करने का उठाया।

अंग्रेज सरकार चक्रवर्ती जत्थे के इस प्रचार से बहुत परेशान हुई। वारंट तो उस ने जत्थे के मुखियों के निकाले ही हुए थे अब बाकी प्रचारकों के भी निकालने शुरू कर दिये। सरकार समझती थी वारंट निकलने पर ये डर कर चुप करके बैठ जायंगे पर बात इसके विपरीत हुई इन प्रचारकों ने घर बैठना ही बंद कर दिया और रोज के रोज दीवान लगाने शुरु कर दिये। लोगों की हमदर्दी भी इन के साथ रही। पुलिस ने कई डरावे तथा लालच दे कर भेदियों को तैयार किया जो इनका पता टिकाना दें। नंबरदारें को मिनट मिनट की खबर थाने पहुँचाने को कहा गया। जिस गांव में दीवान हो या जो लोग उन्हें रोटी आदि खिलायें तो उन लोगों को पुलिस ने तंग करना आरंभ कर दिया।

एक तरफ हकूमत ने, लोगों पर पुलिस द्वारा दबाब डालना आरंभ किया तो दूसरी ओर बब्बरों के प्रचार का प्रभाव गंवाने की गर्ज से अंग्रेजों ने गांवों के नंबरदारों, सुफैदपोशों, जैलदारों, पैंशनरों तथा अन्य जी – हजूरियों को एकत्र करके "शांति सभाए" बनानी शुरू कर दी गयी। ये सभायें गावों पंचायतों तथा दीवान लगा कर इस प्रकार का प्रचार किया करती: –

"हमारी इस सरकार ने हिंदुस्तान को स्वर्ग बना दिया है। हमारे लिए गाड़ियाँ, मोटरें, स्कूल, डाकखाने, नहरें तथा हस्पताल कायम किये हैं। सब चोरी डाके, समाप्त करके शांति का राज्य स्थापित किया है। हाथ पर सोना ले कर घुमे जाओ, कोई आंख उठा कर नहीं देख सकता। अदालतों में सही न्याय होता है। परंतु अब थोड़े से सिर फिरे लोग गांवों में फिरने लग गये हैं। वे कहते हैं, दुबारा सिखों का राज्य ला कर कढ़ाईयों में से दूध उठा – उठा कर पीना है। वे पैसे वालों को लूटने मारने तथा भले लोगों को कत्ल करने का प्रचार करते हैं। वे राहियों को लूट लेते हैं और बहुबेटियों से रोटी छीन कर खा जाते हैं। पर ये अंग्रेज तो टोपी वाले सिख हैं और इन को गुरुओं का आर्शीवाद है, इसलिए इनकी पाताल में जड़े हैं। इसलिए बब्बरों के झांसे में आ कर कोई शांति भंग न करके बल्कि उन की सूचना सरकार के घर पर देकर नेकनामी हासिल करें।"

लोगों पर इन चाटुकार धूर्तो का कोई असर नहीं होता था। वे जानते थे कि ये चाटुकार तथा गद्दार शांति के नाम पर कौमी दुश्मन, ब्रिटिश सामराज्य के जूते खाते रहने को अमन शांति कहते हैं। इन अमन सभाओं के जलूसों में उल्लू बोलने लगे तो चाटुकरों ने लोगों को एकत्र करने के लिए अपने दीवानों में कंजरियों के नाच, बाजीगरों, नक्कालों तथा अन्य नौटंकी तमाशे के कार्यक्रम तथा मिठाईयां बांटनी आरंभ कर दी। आम लोग, खेल तमाशे में एकत्र हो जाते और बाद में उठ जाते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इन शांति सभाओं के प्रबंधकों ने एक बार धत्रोवाली में बीस बाइस गांवों के लोग एकत्र किये हुए थे कि अचानाक ही किशन सिंघ तथा उनके तीन और साथी पिछली ओर से सीधे ही स्टेज पर आ चढ़े। एक साथी ने तलवार निकल ली और दूसरे ने बंदूक तान ली। किशन सिंघ ने लैक्चर समाप्त करके चाटुकारों को ललकारा कि वे उठ कर उसको ग्रिफतार करें, लैक्चर समाप्त करके वह मोटर में बैठकर चलते बने। इस प्रकार शांति सभाओं की दीवानों को भी जत्थे के सदस्यों ने अपने प्रचार के लिए प्रयोग किया। लोग भी इतने निर्भय हो गये कि पुलिस के बुलाने पर भी न जाते और जब पुलिस तंग करती तो जत्थे के मैंबरों के कहे अुनसार कह देते कि ये हथियार दिखा कर रोटी खा जाते हैं।

13 जनवरी 1922 को अनंदपुर तथा कीरतपुर गुरद्वारे पर इस जत्थे के सदस्यों के प्रयास द्वारा स्थानीय संगत को गुरद्वारा प्रबंध प्राप्त हुए। कीरतपुर से वापिस आ कर तहसील जलंधर के सीरोवाल इलाके में प्रचार किया गया। हरीपुर में जनवरी तथा फरवरी 1922 में दो तगड़े दीवान किये गये। इसके अलावा और बहुत से गांवों में प्रचार हुआ।

मार्च के आरंभ में कांग्रेस की ओर से खुरदपुर में एक भारी दीवान हुआ जिस में कांग्रेसी लीडरों ने चर्खे तथा शांति का प्रचार किया। चक्रवर्ती लीडर भी यहां पहुंच गये और कांग्रेसी लीडरों की तकरीरों के पश्चात जत्थेदार ने बोलने के लिये समय लिया। जत्थेदार ने भाषण करते हुए कहा "ये जो लोग अभी प्रचार करके गये हैं, बनिया पार्टी के लोग है। ये शांति का ढोल पीटते जाते हैं, पता नहीं इन्होंने लोगों को कौन से कुएँ में धकेलना है? ब्रिटेन सरकार जुलम तथा अत्याचार करती है और ये लोगों को शांति का सबक पढ़ाने चल पड़े हैं। इन्होंने हमारे देश की ऐसी – तैसी कर देनी है। लोगों अब इन का पीछा छोड़ो, कायरता का त्याग करो, हथियारबंद हो जाओ, और ब्रिटेन सरकार को जोर से निकालने के लिए तैयार हो जाओ।" जलसे का प्रधान लछमन सिंघ बंगाल वाला था। तकरीर जत्थेदार कर रहा था और वह कुर्सी पर बैठा ही कांप रहा था। आखिर उसने किशन सिंघ को बोलने से रोक दिया और जलसा समाप्त कर दिया।

मार्च 1922 को अनंदपुर होले – महल्ले के दीवान के अवसर पर किशन सिंघ तथा साथियों ने धड़ल्लेदार प्रचार किया। जब उसने ब्रिटेन राज्य के अत्याचारों को भयानक तस्वीर खींच कर लोगों के सामने पेश की, तो श्रोताओं के रोंगटे खड़े हो गये। सिख इतिहास तथा गुरबाणी के प्रमाण दे कर लोगों को यहां ला खड़ा किया कि ऐसे जुल्म, जबर तथा अत्याचार के विरूद्ध लड़ना ही सिक्खी है जब पुलिस स्टेज को घेरने लगी तो जत्थेदार ने कृपाल निकाल कर कहा पुलिस मुझे पकड़ने का इरादा रखती है, परंतु कहीं बिल्ली के गले में घटी डालने के लिए चूहों के इरादे वाली बात ने हो । मुझे जिसने पकड़ना है जरा तगड़ा हो कर आये।" लोग बोल उठे, "तुम्हारे समीप पुलिस को आने नहीं देंगे।" दो दो सिपाहियों के आस पास, सौ सौ व्यक्ति उठ खड़े हुए। पुलिस अपने आप ही हट गयी और किसी की पीछा करने की हिम्मत भी न हुई।

परंतु सरकार बेखबर न थी। उसने चाटुकरों को हल्लाशेरी दी और पुलिस की गश्त बढ़ा दी। जत्थे ने 19 मार्च 1922 को विचार करके फैसला किया कि चाटुकरों से बहुत खतरा पैदा हो गया है। ये पुलिस को खबरें देते हैं और जलसों में गड़बड़ पैदा करते है। लोगों को धमकियां देते हैं और रौब डालते हैं, इसलिए इन की रोकथाम करना आवश्यकता है। यदि इन को सजा न दी गयी तो इन के हौंसले बहुत बढ़ जायेंगे, प्रचार तथा बगावत की तैयारी का काम बहुत कठिन हो जायेगा। इसलिए पहले हर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

चाटुकार को प्रताड़ित किया जाए और यदि फिर भी बाज न आयं तो इन के नाक कानकाट दिये जायें। इस प्रकार कुछेक चाटुकारों को सुधारने की कोशिश की गयी पर बहुत सफलता न मिली। अंग्रेज पुलिस तब पांव पड़ी जब अप्रैल 1922 के आरंभ में किशन सिंघ ने साथ जांलधर छावनी के पास बब्बर अकाली प्रचार कर रहे थे तो पता चला कि खजरुले की पुलिस चौकी में एक सिख को काली दस्तार बांधने तथा कृपाण रखने के कारण पीटा जा रहा है। जत्थे के तीन सिंघ नंगी तलवारें निकालकर पुलिस चौकी में जा गराजे। उनको देखते ही सिपाहीयों के रंग पीले पड़ गये और वे माफी मांगने लगे। जत्थे के मैंबरों ने कहा कि सिख के पैरों पर पड़ो और क्षमा मांगो। सिपाहियों ने ऐसा ही किया और जान बख्शी करवाई।

इस चक्रवर्ती जत्थे का काम तो बहुत बड़ा था, गोला – बारूद सीमित थे और शुरू में ही सरकार द्वारा तकड़ा विरोध हुआ। गोला – बारूद की प्राप्ति के लिए सैनिकों से भी मुलाकातें की गयी और विद्यार्थियों को भी तैयार किया गया। पैसे एकत्र करने का भी काम किया गया। 3 जुलाई 1922 को बिछोड़ी का नम्बरदार जो गांव का लगान देने जा रहा था, उससे 575 रूपये छीन लिये और नंबरदार को साफ कह दिया कि हमारा धर्म तो विदेशी सरकार का नुक्सान करना है। हमारा तेरे साथ कोई वैर विरोध नहीं है। इन पैसों को शस्त्र खरीदे गये और एक खुफिया अखबार निकालने के लिए साइक्लोस्टाइलिंग मशीन भी खरीदी गयी।

पुलिस ने जत्थे के एक मुखी, संत करतार सिंघ को जब जून 1922 में ग्रिफतार कर लिया तो उस ने बहुत जल्दी में माफी मांग ली और वह पुलिस को सहयोग देने की बात मान गया। इसी महीने मास्टर मोता सिंघ को ग्रिफतार कर लिया जब वह शौच के लिए जंगल में बैठे थे। इस प्रकार आरंभ में ही इस आंदोलन को धक्का लगा।

अगस्त 1922 में जत्थे के सभी मुखियों ने एकत्र हो कर गुरु ग्रंथसाहिब के सम्मुख वर्किंग कमेटी बनायी, चुनाव करवाया और एक खुफिया अखबार "बब्बर अकाली दुआबा" शुरू किया। जत्थे का नाम भी अब "बब्बर अकाली" जत्था बन गया और सदस्यों को भी "बब्बर" तखल्लुस मशहूर हो गया। खुफिया अखबार के ऊपर गुरबाणी की पंक्ति तथा बीच में लहू को उबाल देने वाले लेख हुआ करते। इसी से, इश्तिहार निकाले जाते जो चाटुकारों के घरों के दरवाजे पर लगाये जाते कि वे उल्टे रास्ते छोड़ दें नहीं तो बब्बर तथा उनकी धुनायी करेगा। पत्रिका में भड़काने वाले लेख तथा जोशीली कवितायें होतीं। छापने वाली प्रैस का नाम सफरी प्रैस लिखा होता था। फिर इस का नाम "उडारू प्रैस" बदल दिया गया क्योंकि प्रचारकों के साथ – साथ इन का प्रैस भी सफर करता था। अकस्मात अगस्त के अंत में गुरु के बाग का मोर्चा लग गया जिस में शांतिपूर्ण अकालियों की बहुत बेरहमी से मार पिटाई की जाती । यह मोर्चा सितम्बर तक खूब गर्म रहा। जत्थेदार किशन सिंघ बब्बर ने शिरोमणी कमेटी को इस संबंध में एक विशेष पत्र लिखा: –

"क्यों व्यर्थ गुरु के बाग में सिक्खो के हड्डी पिंजर तुड़वाते हो और लोगों को अनावश्यक कुर्बानियां देने के लिए मजबूर करते हो? यदि तुम सरकार से गुरूद्वारों तथा देश की पूर्ण आजादी के चाहवान हो तो इस का मुकाबला करने के लिए श्री साहिब (कृपाण) उठानी होगी। यदि तुम यह रास्ता पकड़ो तो मैं सैकड़े जत्थे ले कर अमृतसर पहुँच सकता हूँ।"

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शिरोमणी कमेटी के सचिव ने यह पत्र हरकारे के हाथों ही वापिस भेज दिया और कहा कि जत्थेदार साहिब को कहो कि ऐसे संदेश भेजने का कष्ट न किया करें।

सरकार का दबाव : दूसरी ओर सरकार को अच्छे कान हो गये। उसके लिए काफी अड़चन आयी। एक ओर शांतिपूर्ण लड़ाई अकालियों की, दूसरी ओर भड़काऊ तशदद, उक्साने वाला प्रचार बब्बरों का, मोर्चे में हुई मार पिटाई के कारण सरकार बहुत बदनाम हुई और बीस दिनों तक गुरु के बाग की मार पिटाई तो बंद कर दी पर ग्रिफतारियां जारी रखी जो कि नवम्बर के दूसरे सप्ताह तक चलती रहीं। अब बब्बरों की ओर उन्होंने अधिक ध्यान दिया। सी. आई. डी. ने सरगार्मियां तेज कर दी, पुलिस के बड़े अफसरों में काफी बैचेनी फैल गयीऔर स्पेशल पुलिस की शक्ति बढ़ाई गयी। नवम्बर में ही जब गुरु के बाग ग्रिफतारियाँ बंद हुई इधर बब्बरों को ग्रिफतारी के लिए इनामी इश्तिहार निकाले गये जिस में जत्थेदार की ग्रिफतारी के लिए 2000 रुपये, ऐडीटर के लिए 1000 रुपये तथा बाकियों के लिए 500 रुपये इनाम रखे गये। यह इश्तिहार गांव – गांव लगाये गये और पुलिस ने बब्बरों को पनाह देने वालों को भी तंग करना शुरू कर दिया।

अब बब्बरों के लिए काम करना बहुत कठिन हो गया। जहां आम लोग बब्बरों के साथ सहमत थे, वहां चाटुकार, सफैदपोश सरकारी, जी – हजूरियों से बब्बर आंदोलन को भारी खतरा हो गया। बब्बर अकालियों ने 25 दिसम्बर 1922 को जनरल मीटिंग करके फैसला किया कि चुने हुए चाटुकारों को समाप्त किया जाये क्योंकि इन को सुधारने के ऐलान तथा धमकियों का कोई असर नहीं हो रहा और ये आंदोलन के लिए बहुत खतरनाक सिद्ध हो रहे हैं। बल्कि आम लोग भी इन चाटुकारों से तंग थे। खबरें दे कर, यदि बब्बर नहीं पकड़े जाते तो आम लोग को पकड़ा दिया जाता। बब्बरों ने और मीटिंग करके मैंबरों के लिए कोड भी तैयार किया जो कि इस प्रकार था:

(1) पिटठुआं – चाटुकारों की कब और किसने खत्म करना है, इसका फैसला वर्किंग कमेटी करेगी। कोई जल्दबाजी में कार्यवाही न करे।

(2) कोई चाटुकार किसी को अचानक मिल जाये तो उस को समय की नजाकत देख कर समाप्त कर देने का अधिकार हैं, और आवश्यक हैं।

(3) वर्किंग कमेटी की हिदायत के बिना किसी चाटुकार की कोई चीज न उठायी जाए। जहां से कोई फंड हाथ आये वह सीधा वर्किंग कमेटी के पास पहुंचाया जाय ताकि इससे आवश्यक तथा बब्बर अकाली दुआबा अखबार के खर्चे पूरे किये जा सकें।

(4) एक्शनों के दौरान चाटुकारों के बच्चों को कुछ न कहा जाए और न ही किसी औरत का अपमान किया जाय। (5) बब्बर जत्थे का मैंबर वही रह सकता है जो हुकम होने पर सारे काम छोड़ कर लगी हुई डयूटी पूरी करे। (6) चाटुकारों के नाक, कान काटने का फैसला रद्द किया जाता है क्योंकि ऐसा करने के लिए एक तो समय अधिक लगता है दूसरे चाटुकार के जिंदा रह जाने के कारण ऐक्शन करने वालों का पता लग सकता हैं, तीसरे इससे कई क्षेत्रों में बब्बरों के विरूद्ध नफरत भी पैदा हो सकती है। आगे से चाटुकरों पिट्ठुओं को समाप्त कर देना होगा। (7) हर कत्ल का ऐलान दो तीन बब्बरों के नाम पर, बब्बर के अखबार में किया जाया करेगा। (8) बदनाम साहूकारों चाटुकारों तथा हकूमत की जायदाद को लूट लेना उचित है पर इसके बिना और किसी के माल या धन को हाथ लगाना,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जुर्म समझा जायेगा। और धन इस प्रकार प्राप्त हो, उसको जत्थे के साँझे फंड में डाला जाय, कोई आदमी अपने निजी खर्च के लिए प्रयोग न करे।

इस कोड पर पूरी पूरी ईमानदारी से काम लिया गया। जिस ने भी अपने आप जल्तबाजी में काम किया, उसी को जत्थे में से बाहर निकाल दिया गया।

आंदोलन का चढाव : सन् 1923 का आरंभ होने पर बब्बरों तथा पुलिस दोनों की मच गयी। 5 जनवरी को दो बब्बरों को इन के मित्रों ने लालच वश दगा दे कर ग्रिफतार करवा दिया। एक बब्बर संत करतार सिंघ ने भी, और बब्बरों को पकड़ाने की असफल कोशिश की । 10 फरवरी को एक चाटुकार बिशन सिंघ जैलदार को पार बुला दिया गया जो कि पुलिस, का पक्का पिटठू था। यह चैन से बसते हुए अकालियों के साथ भी द्रोह कमाता था। यह सब किसी सिख को कछहरा डाले, काली पगड़ी बांधे देखता तो इस को अग लग जाती ओर थाने जाकर रिपोर्ट करता और पुलिस से मार पिटाई करवाता। कई बार हाथापाई पर भी उतर आता। हकूमत के नशे में बदमस्त हुआ यह कहा करता था कि मैं बब्बरों के सिर टकरा कर मार दूंगा। 13 फरवरी को ऐसा एक और चाटूकार कत्ल करवा दिया गया।

जैलदार बिशन सिंघ और कुछ अन्य चाटुकारों के खातमें से टाउटों के कलेजे डूबने लगे। उनकी नींद हराम हो गयी । उन्होंने अपने घरों के आस पास दीवारें बनवानी आरम्भ कर दी और लोहे के दरवाजे लगवाने शुरू कर दिये। गांवों में अभी तक घरों में टट्टीयाँ किसी ने नहीं देखी थी परन्तु डर के मारे चाटुकारों के अपने घरों में पक्की हट्यिां बनवा ली क्योंकि उनको टट्टीयां अधिक लग गयी थी, दूसरी ओर बाहर निकलने का साहस नहीं होता था। उन्होंने अदालतों में तारीखों पर पेश होने से इनकार कर दिया। नंबरदारों की गैरहाजरी के कारण अदालती केस रूकने लग गये। सरकारी पिट्ठुओ को सरकार द्वारा बंदूकों तथा पिस्तैलों के लायसैंस जारी किये गये और उनकी रक्षा के लिए सिपाहियों की गश्ती बढ़ा दी गयी। इतना कुछ होने के बावजूद चाटुकार बब्बरों के नाम से कांपते थे, कईयों पर तो बब्बरों का इतना डर बैठ गया था कि इन को स्वपनों में भी बब्बरों से छुटकारा नहीं मिलता था। वे कभी कभी बड़बड़ा कर चीखें मारते या गिड़ गिड़ाने लगते।

जब जैलदार राम नरैण मालपुरिये को पता चला कि बब्बर उसको खत्म करने को फिरते हैं तो उसको गश पड़ने लगी। रात को वह कई बार एकदम बड़बड़ा कर उठ बैठता। बब्बरों के भय ने उस को ऐसा खाया कुछ दिनों में ही सूख कर तीला हो गया। एक रात को वह खटिया पर पड़े हुए चीखने लगा, "आ गये!" बब्बर आ गये!! लोगों मुझे छुड़ा लो!!! हाय, मैं मारा गया। मुझे मार दिया।" पास की चारपाइयों से उठ कर अभी घर वाले उसके पास पहुंचे ही थे कि वह शरीर त्याग गया।

वरियाम सिंघ धुगा और उसके कुछ साथी 1923 के आरंभ तक डाके, चोरियों व मार धाड़ का काम किया करते थे। पर बब्बरों से प्रभावित हो कर और बब्बर अकाली पत्रिका पढ़ कर, उनके दिल को ठोकर लगी और बब्बरों का प्रोग्राम उन्हें बहुत पसंद आया। आखिर ये जत्थेदार किशन सिंघ तथा बाबू संता सिंघ को 16 फरवरी 1923 को मिले। जत्थेदार साहिब ने इन को समझाया और काफी लम्बे समय तक विचार करने के पश्चात समझाये गये। हर रोज पांच बाणियों का पाठ करना होगा, व्यक्तिगत शत्रुता के लिए कोई काम नहीं करना होगा, बहु बेटियों की इज्जत पर हाथ नहीं डालना..... आदि। इन्होंने सहमति प्रगट की और जत्थे में शामिल हो गये।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बब्बरों द्वारा किये जा रहे ऐसे कार्यों से आम लोग बहुत खुश हुए। एक तो उन्होंने डाकुओं को सीधे रास्ते पर डालकर उनके जीवन सुधार का काम किया दूसरे उन्होंने अकालियों को कहा कि शराब के ठेके बंद किये जाए। कोई ठेका न ले। जो लेगा उसकी धुनायी हम कर देंगे, तीसरे सड़कों पर लगे आमों के पेड़ों का ठेका भी कोई ने ले।'' ऐसे ही हुआ । 1922 तथा 1923 में न तो किसी ने शराब का ठेका लिया और न ही किसी ने आम तोड़ने का ठेका लिया। लोगों ने पेट भर कर आम खाये और नामुराद शराब से छुटकारा पाया।

उधर पुलिस ने अपनी गश्त तेज कर दी। अंदर ही अंदर पुलसिये भी कांपते थे। बब्बरों को सामने देख कर पीठ दिखा जाते पर मुकाबला न करते। बड़े अधिकारियों को अधिक चिंता हुई, क्योंकि जितने कत्ल हुए थे, उनको न तो गवाह मिलते, न कोई कत्ल का सुराग। पुलिस काम कैसे करे? पुलिस ने आम लोगों को तंग करना आरंभ कर दिया। थोड़ी से भी भिनक लगने पर मार पिटाई करने लग जाती।

3 मार्च 1923 को चार बब्बरों ने जमशेर स्टेशन पर आधी रात को हमला कर दिया। उस स्टेशन के बाबू तथा जमांदार के बारे मे जनता को भी शिकायत थी और बब्बरों को भी गालियां निकालते थे। बब्बरों ने सरकारी रकम कब्जे में की और बाबू तथा जमांदार से नाक रगड़वा कर भविष्य में गलती न करने के इकरार लिऐ। इसी प्रकार 11 मार्च को गांव नंगल शामा के नंबरदार बेटे की भी धुनाई की। इस को बब्बरों के बारे में थोड़ी से भिनक लगती तो यह थाने की ओर भागा जाते और बब्बरों के बारे मे रिपोर्ट देता।

19 मार्च को डानसीवाला में ''भारी भीड़ थी बब्बरों का विचार था कि वहां पर जरूर कई चाटुकार आयेगे। इसलिए उन्होंने कुछ चाटुकारों को खत्म करने का फैसला किया और वहां पहुंच गये। सारे दिन की तलाश के पश्चात उनको लाभ सिंघ मिस्तरी, जो कि सी. आई. डी. का सिपाही था, अपने लड़के के साथ जाता दिखाई दे गया। वह अपने मन में विचारों के बहिश्त बनाता चला जा रहा था। कि अचानक धन्ना सिंघ की टी..... करती गोली आई और उसका जीवन समाप्त कर गयी। उसका लड़का जो कि केवल आठ साल का था, सब कुछ कर ठिठुर गया। धन्ना सिंघ ने प्यार दे कर बेटा, बापू देशद्रोही था, इसलिए यह सजा मिली है। तू इससे सबक लेना। बड़ा हो कर देशभक्त बनाना और अपने बापू का लगाया कलंक धो देना।''

पुलिस ने, गवाह तथा कांतिल ने मिलने के कारण आम जनता पर गुस्सा निकालना शुरू कर दिया,तो बब्बरों ने 22 मार्च को फैसला किया कि खुला ऐलान किया जाय कि हम कातिलों के जिम्मेवार हैं। सारे कत्लों की जिम्मेवारी, चाहे, वह किसी ने ही किये थे या आगे से किये जाने थे, उनकी जिम्मेवारी तीन मुखी बब्बरों ने उठायी। ये थे, कर्म सिंघ एडीटर दौलत पुर, धन्ना सिंघ बहिबलपुर और उदय सिंघ रामगढ़ झुंगीया। इन तीनों के प्रण किया कि वह जिंदा पुलिस के हाथ नहीं आयेंगे। इन के नाम बब्बर ऐलान में छपा करेंगे। जब भी कोई कत्ल किया जायेगा। या किसी का सुधार या धुनाई की जायेगी तो जत्थे की हिदायत के अनुसार किया जायेगा । इसी दिन उन्होंने गवर्नर पंजाब के नाम खुला पत्र लिखा कि उन्होंने गवर्नर के अत्याचारों से तंग आ कर तलवार को हाथ डाला है और दोषियों को सजायें दी है। बब्बरों की यह पूरी चिट्ठी सरकार के लिए एक चुनौती थी। पुलिस ने जगह जगह पर छापे मारे, तलाशियां ली, पुलिस ने कोट फतूही वाले गढ़ में ग्रंथी अमर सिंघ की ग्रिफ्तार करके उस के कई सुराग ले कर 20, 21 व 22 अप्रैल को जगह जगह पर अचानक छापे मार कर 15 बब्बर और ग्रिफ्तार

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कर लिये। इधर बब्बरों ने मार्च – अप्रैल में दो और चाटुकारों की धुनायी की तथा इस बारे में खुला ऐलान किया। इधर सरकार ने लहर दबाने के लिये कई स्पैशल अधिकारी नियुक्त किये, नये इनामों का ऐलान किया कि हर उस व्यक्ति को छः मुरब्बे जमीन दी जायेगी जो कातिलों के जिम्मेवार को पकड़वायेंगे। पर इस सब से सरकार को कोई विशेष सफलता नहीं हुई इसी समय सरकार के लिए कई कठिनाईयां खड़ी की गयीं। जैसे कि एक ओर अप्रैल महीने में पंजाब में हिंदू मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगे हुए, इस में अकाली कार्यकर्ताओं ने जान पर खेल कर मजलूमों की रक्षा की। इस काम के लिए सरकारी मशीनरी नकारा सी ही हो गयी थी। दूसरी ओर सारे पंजाब की जेलों में गुरु के बाग के, मोर्चे में ग्रिफ्तार हुए अकालियों से भरी पड़ी थी जिन से सरकार को डर तो नहीं था पर जेलों का खर्चा बहुत बढ़ गया था। तीसरी ओर बब्बर अकालियों ने, सरकार के जी हजूरियों के कत्ल का प्रोगराम शुरू किया हुआ था। और दुआबे में सरकारी काम काज ठप्प सा हुआ पड़ा था। आम लोगों में यह मशहूर हो गया था कि अंग्रेजी राज्य अब कुछ समय का ही है, शीघ्र ही बब्बरों के द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त होगी।

सरकार की कुटिल नीति : इस दशा का सामना सरकार ने कुटिल नीति से किया। सरकार ने बड़े अकाली लीडरों पर अपने वफादारों पर हुए आक्रमणों तथा कत्लों का जिम्मेवार बब्बर जत्थे को ठहराया तो फिर शिरोमणी कमेटी ने 24 अप्रैल को एक लम्बा बयान निकाला जिस में कहा गया था : "गुरु के बाग के मोर्चे के समय सिक्खों ने जो शांतिपूर्ण आदर्श पेश किया है उस से कमेटी को निश्चय हो गया है कि जागे हुए सिक्ख दिलों में तशदद का बीज कभी नहीं बीजा जा सकता । कुछ संजीता आदमियों ने अपने पर लगातार जुल्म होता देख कर (उन्होंने) तशदद करने का ख्याल किया होगा। यदि ऐसे अच्छे तथा सुच्चे आदमियों ने जिन से सब का प्याला भर चुका था, कुछ किया है तो शिरोमणी कमेटी उनके साथ हमदर्दी रखती है – कमेटी बहुत जोर तथा प्रेम से अपने भूले भाईयों के पास विनय करती है कि वे सब तथा शांतिपूर्ण रवैये को दृढ़ता से धारण करें जो कि खालसा की रवायतें में है। इसके पश्चात सरकार ने 27 अप्रैल को गुरु के बाग के मोर्चे में गिफ्तार अकालियों की रिहाई का ऐलान किया। इतना ही नहीं शिरोमणी कमेटी तथा अकाली लीडरों ने अपनी तकरीरों तथा ब्यानों में यह स्पष्ट किया कि बब्बरों द्वारा अत्याचार भरे प्रचार की पालिसी अच्छी नहीं है, पंजाब में सिख कोई राज्य कायम नहीं करना चाहते आदि। चाहे किसी भी संदर्भ में यह निकाले गये पर सरकार को इससे काफी सहायता मिली और वह बब्बर आंदोलन को दबाने में सफल हो गयी।

15 मई 1923 को जलंधर डिवीजन के कमिशनर हरी किशन कौल को बदल कर मिस्टर टाउन सैंड को लगाया । 200 रिसाले वाले तथा 250 पैदल फौजियों की स्पैशाल ब्रिगेड तथा एक हवाई जहाज जून महीने में कमिशनर के अधीन किया गया। जुलाई के मास से नये कमिशनर ने शोर शराबे वाले इलाकों में बब्बरों की खोज शुरू की गयी। पुलिस से संत करतार सिंघ बब्बर को फुसला कर सरकारी मुखबर बना लिया। उससे ग्रिफ्तार किये गये दूसरे बब्बरों के बारे में काफी जानकारी प्राप्त की गयी। ग्रिफ्तार किय बब्बरों को बहुत खौफनाक सजायें तथा कष्ट दिये गये जैसे पैरों की तलियों पर चारपाई के पाये रख कर बैठ जाना, मूछों दाहड़ी तथा नाजुक अंगों के बाल खींचने, गुदा में मिर्ची डाल कर तड़फाना नाखूनों में सूइयां चुभोना, पैरों की तलियों में डडे मार – मार कर खड़ा होने को कहना, उल्टे लटकाना आदि। अधिकतर बब्बरों अकालियों ने कोई भेद न दिया और सभी कष्ट वे हंस हंस कर सहार गये। बब्बरों को केवल मार पिटाई कर डर ही नहीं दिया बल्कि कई कई युक्तियों खेलकर भेद पाने की

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कोशिश की गयी। कुछ सीमा तक पुलिस इस काम में कामयाब हो गयी। अगस्त में तीसरा इनामी इश्तिहार निकाल गया जिस में इनाम की रकम बढ़ायी गयी और इनाम भी बढ़ाये गये । लगभग 15 बब्बरों को मुखबरों के द्वारा पुलिस ने अगस्त सितम्बर में ग्रिफ्तार कर लिया।

साथियों को दगा देना : अनूप सिंघ बब्बर के चाचा ने लालच वश हो कर अनूप सिंघ को फुसला कर बाकी के बब्बर ग्रिफ्तार करवाने के लिए योजना बनायी जिस से वह 31 अगस्त को सफल हुए। कर्म सिंघ ऐडीटर, उदय सिंघ रामगढ़ बिशन सिंघ मांगट, महिंदर सिंघ पंडोर, गंगा सिंघ और अनूप सिंघ गांव बबेली रियासत कपूरथला में पहुंचे, जहां जहां अनूप सिंघ के कहने पर शिव सिंघ के घर निवास किया। मौसी की बीमारी का बहाना बना कर अनूप सिंघ वहां से चला गया और पुलिस को सूचना दे दी। जब रात को सारे सो गये तो अनूप सिंघ ने सारे बंबों में तेल डाल दिया, बंदूकों के कुंडे कब्जे खराब कर दिये और कारतूसों को झोला गायब कर दिया। सुबह सवेरे ही मिस्टर स्मिथ की कमांड में करीब दो हजार हथियारबंद सेना तथा पुलिस ने पहुंच कर पूरे गांव को घेर लिया। सुबह जब बब्बर उठे और गांव घिरा हुआ देखा तो वे समझ गये कि दुश्मन पूरी इतलाह पर आया है और यह विश्वासघात अनूप सिंघ ने किया है। उन्होंने पहले अनूप सिंघ को पार बुलाने की सोची, पर वह पहले ही हाथ खड़े करके पुलिस को ग्रिफ्तारी दे चुका था।

बुबेली का शहीदी कांड : कर्म सिंघ ने अरदास करके जैकारा गजाया और एक फायर करके स्वयं गांव से बाहर आ गये । उन्होंने सोचा कि यदि गांव के अंदर ही रहे तो गांव वालों का नुक्सान किया जायेगा। कर्म सिंघ तथा उसके साथियों ने प्रस्ताव पास किया कि हथियार तो तकरीबन सब के नकार हो चुके है। इसलिए दो हाथ आमने सामने वाली तलवार लड़ाई में ही हो जाय। गांव में जिस ओर फौजी टुकड़ी का पहरा था, उधर से बब्बर साफ बच कर निकल गये क्योंकि उस टुकड़ी के हवलदार ने जवानों को शांत रहने का हुकम दिया था। बब्बर सीधे कूए की और बढ़े जहां कि एक गोरा अधिकारी शहतूत की छाया में बैठा था। बब्बरों को देख का उस के होश हवास गुम हो गये और वह ऊँचे ऊँचे शोर डालने लगा ..... हाय मार दिया, मार दिया, उसके सिपाही भी आ पहुंचे। बाद में मिस्टर स्मिथ ने हल्ला शेरी दी और बब्बरों को हथियार फेंक देने को कहा। पर बब्बरों ने उत्तर दिया, तेरे साथ क्या बात करें जो चार व्यक्तियों को ग्रिफ्तार करने के लिए दो हजार सेना चढ़ा लाया है। हम भी जिंदा जी आज हाथ नहीं आने के। ''बब्बरों ने सातवीं पातिशाही के गुरद्वारे की ओर अपना रुख किया और लड़ते लड़ते बढ़ने लगे। गुरद्वारे के सामने पानी का नाला बह रहा था जिस पर फतेह खां रिसालदार ने कब्जा किया हुआ था। बब्बरों ने दूसरे किनारे लगने के लिए पानी में छलांगे लगा दी। इधर से स्मिथ ने गोली चलाने का आदेश दे दिया कि ये जिंदा हाथ नहीं आ रहे । यदि कहीं किनारे पारे करके ये घास फूंस व झाड़ियो में से हो कर गुरद्वारे जा निकले तो पकड़ना बड़ा मुश्किल हो जायेगा। तैरते हुए बब्बरो पर गोलियाँ चलने लगी। उदै सिंघ तथा महिंदर सिंघ तैरते ही गोलियों से छलनी हो गये। कर्म सिंघ घायल हो गया। किनारे लग कर उसने फतेह खां पर गोली चला दी पर फतेह खां ने नीचे झुक कर बचाव कर लिया। पूरे रिसाले ने धड़ा धड़ गोलियां चला कर कर्म सिंघ को शहीद कर दिया। बिशन सिंघ मांगट घायल हो कर घिसटे घिसटे गुरद्वारे की ओर जा निकला। पर सख्त घायल होने के कारण निढाल हो गया। ढूढंते जब घुड़सवार उस के पास पहुंचे तो उसने गुस्से में आ कर जैकारा छोड़ा और एक सवार कृपाल का एक वार किया। जो उसकी जाँघ पर लगा और वह बेहोश होकर नीचे गिर गया। दूसरे सवारों ने गोलियां चला कर बिशन सिंघ को शहीद कर दिया।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इन बब्बर नेताओं की शहीदी के पश्चात शिव सिंघ तथा और लोगों को बब्बरों की सहायता करने के दोष में ग्रिफ्तार कर लिया तो पूरे इलाके पर इस शहीदी कांड का गहरा प्रभाव पड़ा। पुलिस को भी काफी मायूसी हुई कि वह इन अग्रणियों को जिंदा ग्रिफ्तार करने में सफल नहीं हो सकी। बल्कि उनका नुक्सान भी हुआ। शहीदी कांड 1 सितम्बर 1923 को हुआ । अनूप सिंघ गद्दार, बाद में वायदा मुआफ गवाह बन गया और उसने इस आन्दोलन को काफी हानि पहुंचाई। जून – जुलाई 1936 में इस गददार को तीन बब्बर साथियों ने रात को सोये ललकार कर, पार बुला कर अपना बदला चुका लिया।

धन्ना सिंघ का अद्वितीय कारनामा : जवाला सिंघ तथा बेला सिंघ के दो रईस भाई जो बहुत चालाक थे ऊपर से बब्बरों के हमदर्द बने हुए थे और बीच में पुलिस से मिले हुए थे। इन के घर में 24 अक्तूबर 1923 को धन्ना सिंघ बहिबलपुर, आन्दोलन के किसी काम पर पहुंचा। जवाला सिंघ ने बहुत स्वागत किया। पूरा रात धन्ना सिंघ के साथ बातें करते बिता कर जब उसको काफी थका दिया तो वह (धन्ना सिंघ) सो गया तो ज्वाला सिंघ ने पुलिस को खबर कर दी। मिस्टर होर्टन ने रातों रात 30 सिपाहियों का दस्ता ला कर हवेली को घेर लिया। जवाला सिंघ ने धन्ना सिंघ का रिवाल्वर (जो कल्ली पर टंगा था), और बाकी हथियार पुलिस को पहुंचा दिये। दस सिपाही अंदर गये। पांच छः सिपाही एक दम धन्ना सिंघ पर जा झपटे तथा उसको दबा लिया। उसकी एक एक बांह को दो सिपाही चिपट गये। एक ने केसों को हाथ डाल लिया। बब्बर की नींद खुल गयी। पर वह बुरी तरह जकड़ा हुआ था। वह इंच भर भी इधर उधर नहीं हिल सकता था।

लालटैने जगाई गयीं। बब्बर के अकेले अकेले हाथ को हथकड़ियां जड़ कर बाजु कंधों के ऊपर से पीछे कर दी गयी। एक एक कड़ी को तीन तीन सिपाहियों ने पकड़ लिया। टांगे भी बेड़ियों से बांध दी गयीं। अब हौर्टन तथा जैनकिन्ज भी पास में आ गये।

हौर्टन ने व्यंग किया ..... "धन्ना सिंघ, तुम बोलत था कि जीते जी बब्बर को कोई नहीं पकड़ सकता । अब कैसे हाल हैं? तुम जीते भी हो और ग्रिफ्तार भी हो।"

धन्ना सिंघ ने लाल लाल आंखों से हौर्टन की ओर देखा । हौर्टन को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे आखों में निकल कर अग्नि बाण उस की ओर आ रहे थे। वह तुरंत पीछे हट गया और हुकम किया – इस की आंखे बंद कर दो।"

एक हवलदार आंखे बांधने के लिए रूमाल ढूढंने (खोजने) लगा। बब्बर बीच ही बीच में जहर उगल रहा था क्योंकि प्रण किया हुआ था कि जिंदा जी हाथ नहीं आना है। बब्बर धन्ना सिंघ सोच रहा था, "आज मैं बंधा पड़ा हूँ। जिन गीदड़ो की मैंने बोटी बोटी करनी थी, वे मेरे आस पास चां चां कर रहे हैं। मेरी बगल वाली जेब में फौजी बंब तो है पर उस को चलाऊ किस तरह। किसी ओर भी हिलना असंभव है। यदि कुछ मिनटों में तलाशी ली गयी तो वह भी हाथों से निकल जायेगा।"

हवलदार रूमाल ले कर आया तो धन्ना सिंघ ने हौर्टन को ताना मारा, ओए तुझे शर्म नहीं आती, बड़ा सुपरिटेंडेंट पैदा हो गया। तेरे में मेरी आंखों की तरफ भी नहीं देखा जा सकता। तूं स्वयं मेरी आंखों पर पटटी भी नहीं बांध सकता। यदि मैं खुला होता तो तेरी कब की जान निकल गयी होती?"

हौर्टन ने अपनी बेइज्जती ने होने देने के विचार से हवलदार से रूमाल पकड़ लिया और धन्ना सिंघ की आंखों पर स्वयं पटटी बांधने को चला। धन्ना सिंध ने बिजली वाल शक्ति महसूस की। उसने बाहों को झटका सा दिया । कड़िया पकड़ने वाले झटका खा कर गिर गये। बब्बर ने सारे जोर से कोहनी बंब पर भारी । उस का एक पुर्जा पुर्जा हो कर उड़ गया। पास में खड़ा हवलदार, एक दफेदार, तीन

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सिपाही और एक भैंस मारी गयी। हौर्टन, जैनकिन्ज थानेदार गुलजारा सिंघ और एक सिपाही सख्त घायल हुए। थानेदार और सिपाही माहलपुर जा कर पार हो गये। हौर्टन हस्पताल में जा कर मर गया। जैनकिन्ज वलैत जाते हुए कलकत्ता में मर गया।

धन्ना सिंघ ने अपना प्रण अपने श्वासों के संग निभाया। वह बब्बरों की शान से जीआ और बब्बरों की शान से मरा। वीरता की ऐसी अद्वितीय मिसालें इतिहास में कोई कोई ही मिलती है। कम से कम हिंदुस्तान की आजादी के आंदोलन इतिहास में तो ऐसी कोई मिसाल पेश नहीं कर सकता है। धन्ना सिंघ ने मरते मरते भी आठ नौ शत्रुओं को समाप्त कर दिया और अपनी ही नहीं, बल्कि बब्बर आंदोलन की शान को चार चांद लगा दिये।

मुंडेर का शहीदी कांड : धन्ना सिंघ की शहीदी के पश्चात बब्बर अकाली आंदोलन कमजोर हो गया पर अभी भी कुछ बब्बर पुलिस के हाथ नहीं आ रहे थे। उन्होंने सारे काम का भार अपने कंधों पर उठा लिया। गाँव मुंडेर का जगत सिंघ बब्बरों का हमदर्द था। बाबू सन्ता सिंघ के ग्रिफ्तार होने पर उसके बयानों के आधार पर उसको पुलिस ने ग्रिफ्तार कर लिया और खूब डरा धमका कर मुखबर बनाने में वह सफल हो गयी। बाहर आ कर उसने बब्बरों के साथ सहयोग आरंभ कर दिया। 12 दिसम्बर, 1923 को जगत सिंघ के घर वरियाम सिंघ धुग्गा, बंता सिंघ धामिया, जवाला सिंघ फतेहवपुर सुबह ही पहुंचे। जगत सिंघ ने रोटी पानी की सेवा कर आराम करने के लिए खटिया बिछा दी और खुद जा कर पुलिस को खबर कर दी। जलंधर छावनी से भी जनरल फिट्स की कमान में फौज पहुंच गयी। डिप्टी कमिशनर तथा सुपरिटेंडेंट पुलिस भी पहुंच गये। उन्होंने गांव को घेरा डाल लिया और सारा गांव खाली करवाना शुरू कर दिया। डिप्टी कमिशनर के बब्बरों के हथियारों के बारे में जगत सिंघ से पूछ ताछ की तो उसने जवाब दिया कि अब बब्बर अपने हथियारों का साथ नहीं छोड़ते। पर उसने बब्बरों के हथियारों की जानकारी दे दीं उन्होंने घेरा डालकर पक्का करना शुरू कर दिया। बब्बरों ने जब गांव को घिरा हुआ पाया तो उन्होंने प्रस्ताव पास किया कि किसी प्रकार शाम तक मुकाबला किया जाये और रात के अंधकार में बच कर निकला जाये। बब्बर जगत सिंघ का घर छोड़ कर साथ के बिअंत सिंघ मिस्तरी के चौबारे जा घुसे ताकि गांव के आस पास के स्थल को सुरक्षा की दृष्टि से अच्छी तरह देख सकें। चौबारे पर चढ़ कर उन्होंने जैकारा छोड़ा और डिप्टी कमिशनर जैकूब की ओर गोली चला दी। डी. सी. तथा अफसर बचाव के लिए लेट गये और उन्होंने चौबारे की ओर गालियां चलाई पर बब्बरों का कोई नुक्सान नहीं हुआ। डी. सी. ने दीवार की ओट ले कर पुकारा कि बब्बरों मुकाबला न करो, हथियार रख दे तो मैं तुम्हारी जान बचाने की कोशिश कर सकता हूँ। ''बब्बरों ने डी. सी. को सामने आ कर लड़ने के लिए ललकारा। दो मशीनगनें गाड़ी गयीं। बब्बर फिर भी एक आधी गोली पुलिस पर छोड़ते रहे। शाम साढ़े चार बजे डी. सी. ने मकान को आग लगाने का हुक्म दे दिया तो एक थानेदार तथा तीन सिपाहियों ने दीवारों की ओट में मकान के पास पहुंच कर चौबारे के नीचे पैट्रोल डालकर आग लगा दी। दरवाजे तथा खिड़कियां बंद होने के कारण बब्बरों को इस कार्यवाही का पता नहीं लग सका। जब आग भड़क उठी और बब्बरों को ताव महसूस हुआ तो वे बाहर निकले। कुछ रात भी हो चुकी थी। बंता सिंघ तथा ज्वाल सिंघ दरवाजे के रास्ते भाग निकले तो सामने मशीनगन के वार से ढेरी हो गये। वरियाम सिंघ धुगा पिछली खिड़की से साथ के मकान की छत पर कूद गया और उसने गली में छलांग लगा दी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जहां कुछ पुलिस वाले खड़े थे। उसने जैकार लगाया और गोली से हमला कर दिया। एक सिपाही के गोली लगी, बाकी के दुबक कर बैठ गये। वरियाम सिंघ दायें बायें गोलियों की बौछार करते हुए छलांगे लगाता हुआ बच कर निकल गया।

बब्बरों की ग्रिफ्तारियां : अब पुलिस ने बच रहे बब्बरों की ग्रिफ्तारियां तेज कर दी। नवम्बर, दिसम्बर तथा जनवरी में तकरीबन सारे बब्बर पकड़ लिये गये थे। बाहर कोई आठ दस ही रहे थे, कुछ दुआबे से बाहर चले गये थे। मुखिया लोगों में से केवल वरियाम सिंघ धुगा ही बाहर था जिस ने दुआबा छोड़ कर लायलपुर ठीकरी वाला में रहना आरंभ कर दिया। ग्रिफ्तार किये गये बब्बरों पर कई प्रकार के अत्याचार किये गये। चार अप्रैल 1924 तक 91 ग्रिफ्तार बब्बर सैशन सपुर्द किये गये और 2 जून 1924 को मिस्टर जे. के. टैप की अदालत में बब्बर केस आरंभ हुआ।

वरियाम सिंघ धुगा की शहीदी : इस दौरान वरियाम सिंघ धुगा की मुखबरी उन्होंने ही कर दी जिन के पास वह बार में रह रहा था। इनाम तो उसके सिर पर था ही । 8 जून, 1924 को सुबह वह अकेला ही मुरब्बों में घूम रहा था कि दूर से उसने पुलिस को आते हुए देखा और समझ गया कि यह गीदड़ों की सेना ही है। वह मकान की ओर दौड़ा जहां उसकी बंदूक थी। अंदर जाते ही उसने दरवाजा बंद कर लिया और पुलिस पर गोली चला दी। सिपाही एक दम नीचे लेट गये । सुपरिटेंडेट ने फिर आगे बढ़ने का हुक्म दिया। आगे से वरियाम सिंघ ने फायर किये। पुलिस उठते हुए नीचे लेटते हुए मकान की ओर बढ़ रही थी । वरियाम सिंध ने सोचा कि कहीं मुंडेर की तरह फिर पुलिस आग न लगा दे। उसने गोली दाग दीं। डीगेल भागने लगा तो वरियाम सिंघ ने गर्ज कर ठहरने की आवाज देकर गोलियां दाग दीं। डीगेल तो नकारा हो गया। उधर से चारों ओर से वरियाम सिंघ पर गोलियां चली, जिनसे वह छलनी छलनी हो कर शहीद हो गया। बब्बरों द्वारा मैदाने जंग में पुर्जा पुर्जा कट कर आखरी दम तक गर्जते हुए शहीदियां पा जाने की इलाके में धूम मची। पुलिस तथा सेना भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी। बाकी बच रहे कुछेक बब्बर दुआबा से काफी दूर निकल गये कि पुलिस की मार से बच गये। आठ दस साल के पश्चात उन्होंने फिर वापिस आ कर कुछ चुने हुए दुष्टों का सफाया किया।

बब्बर केस : 2 जून, 1924 को सैशन में केस आरंभ होने से पूर्व बब्बरों को अपने लिए वकीलों की खिदमत प्राप्त करने के लिए कहा गया तो 9 बब्बरों ने वकीलों की सहायता लेने से इन्कार कर दिया। जत्थेदार किशन सिंघ ने ऐलान किया कि उनको हकूमत पर कोई विश्वास नहीं। ये अदालतें दिखावा तथा फरेब हैं। हम इस ड्रामे में हिस्सा लेना व्यर्थ समझते हैं क्योंकि फैसला वही होना है जो हकूमत चाहती है। जज ने भरोसा दिलाया कि वह बिल्कुल न्याय, करेगा, आप वकील अवश्य करो, परन्तु बब्बरों ने इन्कार कर दिया। इसके पश्चात जज ने हुक्म दिया कि जो बाकी 76 बब्बरों के लिए वकील किया गया है, इन 9 के लिए और बाकी 6 जो वकील की सामर्थ्य नहीं रखते थे, के लिए भी वही वकील निश्चित किया जाय।

केस बहुत लंबे समय तक चलता रहा। केस के दौरान तीन बब्बर जेल में ही दम तोड़ गये। 22 वादा मुआफ गवाहों ने अदालत में बयान दिये।

जब जज ने जत्थेदार किशन सिंघ को उनके विरूद्ध इलज़ामों के बारे में कुछ कहने के लिए पूछा तो उन्होंने कहा कि वे ज़ुबानी की जगह पर लिखित बयान दें जज ने इन्कार कर दिया पर जत्थेदार किशन सिंघ ने जिंद करने पर लिखती बयान देने की स्वीकृति दे दी गयी। जत्थेदार के बयान का सारांश

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इस प्रकार है : (सरदार अजीत सिंघ ने नज़रबंदी, रकाबगंज गुरद्वारे की दीवार के गिराये जाने, बजबज के कांड, रौलट ऐक्ट, जलियां वाले बाग की खूनी होली तथा मार्शल लां की मेरे अंदर ब्रिटेन सरकार के विरूद्ध नफरत भर दी थी। मैं मार्च 1921 में पैनशन पर आ कर अकाली बन गया और अप्रैल 1921 में अकाली दल का सैक्टरी बनाया गया। शीघ ही मेरी ग्रिफ्तारी के वारंट जारी हो गये जिस के कारण में चक्रवर्ती हो गया और अलग – अलग जगह पर 357 भाषण किये। सरकार ने पंजाब में असंख्य अत्याचार हत्या किये हैं। हवालातों में सैकड़ों किस्म के कष्ट दिये। बेगुनाहों को पकड़ – पकड़ कर जेलों में फैंका गया। लोगों पर दबाब डालकर झूठी गवाहिया पैदा की गयीं। कर्म सिंघ दौलतपुर तथा उसके जत्थे ने सरकारी पिटठुओं व चाटुकारों के सुधार का काम करके अपने प्राचीन सिख बुजुर्गों के पद चिन्हों पर चलने का ठीक प्रयत्न किया है। सिख इतिहास बताता है कि विरोधियों की धुनाई होना लाजमी है। वायदा मुआफ गवाहों द्वारा पुलिस की उँगलियों पर नाच कर अपने साथियों के विरुद्ध बयान देना डूब कर मरने वाली बात है ..... आदि। यह बयान कोई 100 पृष्ठ का था।

फैसला : अंत में 28 जनवरी 1925 को फैसला दिया गया। इस में 5 बब्बरों को फांसी, 11 को उम्र कैद तथा काले पानी की सजा, 38 आदमियों को चार साल से ले कर 11 साल तक अलग – अलग सजाओं और 34आदमियों को बरी किया गया। बहुत से लोगों ने जत्थेदार किशन सिंघ पर हाईकोर्ट में अपील करने का जोर डाला। लोगों के कहने पर हाई कोर्ट में अपील की गयी। इसके फैसले के अनुसार 6 को फांसी, 38 को दो मास ले कर 7 साल की कैद तथा 10 को काले पानी की सजा 34 बरी कर दिया गया।

छः बब्बरों को फांसी : 27 फरवरी 1926 को जत्थेदार किशन सिंघ तथा उनके साथियों को फांसी लगनी थी। उससे पहली रात को जत्थेदार ने कड़कती आवाज में तकरीर की जिस का सारांश इस प्रकार है :

''हमारे अहोभाग्य है कि हम आज उन सैंकड़ों देशभक्तों की बंगल में खड़े होने वाले हैं जो अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते हुए फांसी के तख्ते पर चढ़े। आज हमारा वैरी खुश होता होगा पर वास्तविक खुशी हमें है क्योंकि हम अपना वचन तथा कर्तव्य पूरा कर रहे हैं और अमर हो रहे हैं। दुश्मन की खुशी सामयिक है। यह समझता है कि हमें रास्ते में से दूर करके वह बेफिकर हो कर मुल्क को लुट सकेगा, पर यह उस की भूल है। शहीदों के खून के कतरे इनकालाबी शक्ति के बीज हैं जो कि दुनियाँ में से सदाके लिए जुल्म तथा जबर का नाश कर देंगे। वह दिन बहुत समीप है जब यह शक्ति भारत में ब्रिटीश हकूमत की जड़ उखाड़ देगी। शहीदों का खून इस इनकलाबी शक्ति को प्रचंड कर रहा है। शुक्र है कि हमें भी इस महान शक्ति का एक तुच्छ अंग बनने का गौरव प्राप्त हुआ है।''

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"यह हकूमत इतनी कमजारे हो चुकी है कि एक बब्बर जत्थे ने ही इस को डेढ दो साल के लिए एक खास इलाके में नाकाम कर दिया था। जब जगह जगह पर ऐसे जत्थे उठ खड़े हुए तो उस हकूमत का क्या हाल होगा?"

हमारी अंतिम इच्छा है कि हमारा देश संग जिंदा करने वाले बब्बरों की आंखों के सामने आजाद हो जाये। हमें यह भी विश्वास है कि ऐसा हो कर रहेगा।"!

सुबह हुई तो बब्बरों ने एक स्वर में पाठ किया। समय समीप आता गया। सुपरिटेंडेंट, दारोगा, मैजिस्टरेट, डाक्टर नंबरदार और जेल पुलिस कोठियों के आगे आ खड़े हुए। बब्बरों को बाहर निकाला गया तो वे जलूस बना कर जैकारे छोड़ते हुए फांसी के तख्ते की ओर बढ़े जैसे मुहिम को विजयी करने जा रहे हो। आम हालात के विपरीत बब्बरों के क्रोध भरे चेहरे दग दग कर रहे थे। उन की गर्दनें ऊंची थी पर जेल स्टाफ के ऊंधी डाल रखी थी। बाकी के बब्बर कैदी जैकारे छोड़ कर अपने साथियों का उत्तर दे रहे थे। जेल में एक प्रकार से कुहराम मचा हुआ था।

आखिर छः बब्बर फांसी के तखते पर खड़े हो गये। ऐसे जानो जैसे दूल्हे फोटो खिचवाने लगे थे। जत्थेदार ने फिर एक दिलकश छोटी सी तकरीर की जिस को सुन कर जेल सुपरिटेंडेंट की आंखों में से आंसू बह गये। वह बोल उठा, "ऐसे लायक आदमी को फांसी की सजा देकर जज ने गलती की है।" जत्थेदार जी मुस्कराये और कहा तेरे आंसू इसलिए निकले हैं कि तेरे मन को भी जाबर हकूमत की गुलामी का अहसास हुआ है। हमें लाली इसलिए आई हुई है कि हमारे मनों में स्वतंत्रता की भावना का दीप बराबर जल रहा है।

तखते गिर गये, छः शूरवीर हवा में लटक रहे थे। बब्बरों ने खुशी खुशी सभी सजाएं प्रवान की। पर इससे बब्बर आंदोलन का अंत नही हुआ। कुछेक जोशीले बब्बरों ने 1933 से फिर कौम द्रोहियों से बदले लेने आंरभ कर दिये। मई 1932 को बेला सिंघ को पार बुलाया, जून 1936 में अनूमप सिंघ गद्दार का भी सफाया कर दिया, मार्च 1940 में धन्ना सिंघ को मरवाने वाले कर्म सिंघ को भी झटका दिया गया। गुरु के बाग में मार पिटाई करवाने वाले बी. टी. सुपरिटेंडेंट पुलिस का कांटा भी पांच बब्बरों ने खींच दिया। ऊधम सिंघ ने सुनाम गांव के बब्बर बाबू संता सिंघ से अगवाई ले कर ही इंडिया हाउस, लंडन में मायकल ओडवायर को 17 मार्च 1940 को गलियों से सदा की नींद सुला दिया। इन बब्बरों को फांसी की सजा भुगतनी पड़ी तो इन्होंने हंसते हंसते स्वीकार की।

बब्बर अकाली आंदोलन का मन्तव्य व कार्यक्रम

बब्बरों ने सिखी स्वाभिमान को पुनः जीवित करने तथा धार्मिक स्थानों को बदचलन, बदमाश तथा अधर्मी उदासी साधुओं के पंजे मैं से मुक्त करवाने के लिए अकाली आंदोलन को सहयोग दिया। धार्मिक स्वतंत्रता के लिए शांति की नीति को अपनाया। जो अत्यचार सिखों पर हो रहे थे उन को चुनौती समझ कर दुष्टों को ठीक करने का बीड़ा उठाया। इनका ध्येय यह था कि यदि 500 इनकलाबी पंजाब में तैयार हो जायं तो हकूमत का तख्ता पलट सकता है और गुरद्वारे स्वयं ही आजाद हो जायें। अपने मकसद की प्राप्ति के लिए बब्बरों ने हथियार एकत्र करने, फौजियों तथा किसानों में हकूमत के विरूद्ध प्रचार करने को अपना कार्यक्रम बनाया।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जज अपने फैसले के पृष्ठ 3 पर लिखता है :

"भड़काने वाली तकरीरों तथा इनकलाबी पर्चे छापकर, बांट कर हकूमत के विरूद्ध भारी संग्राम छेड़ा गया..... साथ ही साथ ऐसा तहलका मचाना चाहते थे जिससे सरकार के वफादारों तथा मददगारों की सांस सूख जायं ताकि आंदोलन को दबाने या रोकने की सरकारी कोशिशें नकारा हो जाये।"

प्राप्तिया : इस आंदोलन की सबसे बड़ी प्राप्ति यह मानी जाती है कि इन के कामों ने गुरद्वारा सुधार आंदोलन (जिस ने शांति की नीति अपनायी हुई थी) के लिए बाड़ का काम किया। सरकार के लिए शांतिपूर्ण अकाली दूसरे नंबर पर थे। उनसे सरकार को कोई बड़ा खतरा नहीं था। सरकार यदि भयभीत थी तो वह बब्बर अकालियों से ही भयभीत हुई थी। सरकार ने गुरद्वारों को आजादी इसी डर से दी कि सभी अकाली कहीं बब्बरों की राह ही न पकड़ लें। इसीलिए ही वह रियायतें देती रही। सरकार नब्ज जानती थी जैसा कि मार्च 1923 की कौसिल में दी गयी, ट्रिब्यून अखबार में छपी, चीफ सैक्टरी मिस्टर करके की तकदीर थी : "मुझे पता है कि गुरुद्वारा आंदोलन के लीडरों ने हमेशा 'शांतिपूर्ण' के सिद्धांत पर प्रचार किया है। मैं उनकी प्रशंसा करता हूं कि उन्होंने अपने मन की बात साफ साफ कही है। उन्होंने अपने पैरोकारों के मनों में शांति का उसूल अपनी मिसाल प्रापेगंडा और व्यवहार द्वारा भरा है"

अकालियोंका जो विरोध गांव के नंबरदार, सरकारी, जी हजूरीयें तथा पुलिस के मुखबार करते थे, उन्होंने भी बब्बरों के डर से ही विरोध करना छोड़ा था, नहीं तो जिस की पीठ सरकार ठोके, उसको किसका डर?

असफलताए : बब्बर अकाली आंदोलन बहुत जल्दी ही समाप्त हो गया और अपने प्रोग्राम में सफल न हो सका। इन सफलता के कारणों को देखना जरूरी हो जाता है क्योंकि बब्बरों जैसे निर्भय शूरवीरों ने शहीदी की राह बनायी, वह सिख रवायतों के अनुसार ही थी, जैसे कि उनके अदालत में दिये ब्यान से जाहिर है जो 6 मार्च 1925 की 'अकाली प्रदेसी' में छपा था।

"..... हम भी अपने शरीर के ठीकरियां लार्ड रीडिंग तथा सर मैलकमहेली के सिर पर तोड़ते हैं ..... हम कोई अपील नहीं करना चाहते ..... अपील तो तब करें यदि हमने कोई पाप किया हो। हमने वही कुछ किया जो श्री गुरु हरिगोबिंद जी तथा दशमेश जी ने किया था ..... आप व्यर्थ अपील में समय न गंवाओं और हमें जल्दी से फांसी पर चढ़ाजाने दो। यदि आप जल्दी ही इस शुभ कार्य को करोगे तो हम आप के बड़े आभारी होगें क्योंकि हम ने अपने प्रीतम के देश पहुचंना है। इस झूठे संसार को जितनी जल्दो छोड़ दें उतना ही अच्छा है।"

देखा जाय तो जहां इतना जज्बां भरा हुआ हो और सफलता न मिली हो तो इसका कारण पंथ में एकता की कमी ही कहा जा सकता है। पंथ एक पालिसी पर एक राय न बना सका और लीडरों में मतभेद होने के कारण सरकार लीडरों को एक दूसरे से अलग कर के रखने में सफल हुई और लीडरों ने एकत्र हो कर विचार करके एक पालिसी पर एकमत होकर सारी शक्तियों को सफल करने में नही लगाया बल्कि एक दूसरे का विरोध करना आरंभ कर दिया। जो आज तक समाप्त नहीं हुआ है।

बब्बरों की जत्थेबंदी भी कुछ ढीली ही रही। अनुभवी सदस्य की संख्या ही कम थी। नये सदस्य भी अधूरी तैयार होने के कारण, निशाने से ऐसे गिरे कि साथ में ही आंदोलने को भी डुबो लिया और उन में से कई वायदा मुआफ तथा मुखबर बन गये। किसी इनकलाबी आंदोलन के लिए तैयारी तगड़ी तथा मुकम्मल चाहिए। अधकचरे तो बहुत ही खतरनाक सिद्ध होते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बब्बरों के लीडरों का लोहा तो सरकार ने भी माना। अदालत में जत्थेदार किशन सिंघ का बयान 100 से अधिक पृष्ठ का था जिस से मैजिस्ट्रेट बहुत प्रभावित हुआ। फांसी पर चढ़ने से पूर्व जो तकरीर जत्थेदार किशन सिंघ ने दी उससे तो जेल अधीक्षक की आखों से नीर बह चला और उसने कहा "ऐसे योग्य व्यक्ति को सजा दे कर जज ने गलती की है।" कमी बस अनुयाइयों की ही थी। जैसे भी हुआ, "मुट्ठी भर बब्बरों ने उस अंग्रेज सरकार को ऐसा भयभीत कर दिया जिसने संसार को फतेह करने का स्वपन देखा ही नहीं था बल्कि कुछ प्राप्त भी कर लिया था। आधुनिक जमाने में प्राचीन गुरसिखों की तरह बब्बरों ने दुशमन की शक्ति की प्रवाह किये बिना उसको ललकारा और सिखों के अस्तित्व को प्रगट किया और सिखी स्वाभिमान व गैरत व स्वभिमान को पुर्नजीवित किया।"

बब्बर अकाली लहर विपल होने पर अंग्रेजों द्वारा एक साथ समुहक कॉसी की सजा दिये जाने पर छः बब्बरों के शव अंत्येष्टी के लिए संगत प्राप्त करती हुई।

अकाली नेता खड़क सिंह जी के भारी दबाव में सम्पूर्ण स्वराज्य की मांग का प्रस्ताव पारित हुआ

लार्ड इरविन की घोषणा जो कि 31 अक्टूबर 1929 की गई थी, के अनुसार समस्त कांग्रेसी नेताओं ने स्वीकार कर लिया कि हम औपनिवेशिक स्वराज्य योजना अनुसार ही आंतरिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने पर संतुष्ट हो जायेगे और उन्होंने सम्पूर्ण स्वराज्य की मांग को त्याग दिया। इस पर अकाली नेता सरदार खड़क सिंघ जी ने अधिवेशन का बाईकाट किया और कहा – हम सम्पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते है अन्यथा हम अपना आंदोलन अलग से करेंगे। इस भारी दबाव में कांग्रेसी नेताओं ने पुनः विचार किया और अकालियों के बल को देखते हुए उन्होंने उनकी बात स्वीकार कर ली। अतः भारी क्षोभ व निराशा के वातावरण में उन्होंने केवल अकालियों के समर्थन के बल पर दिसम्बर 1929 को लाहौर नगर में पण्डित जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में 31 दिसम्बर की अर्धरात्रि को 12 बजे रावी नदी के तट पर भारत का तिरंगा झण्डा फहरा कर पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित किया और कहा – जब भी हमें स्वतन्त्रता प्राप्त हुई हम प्रतिवर्ष 26 जनवरी का दिन स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया करेंगे।

अकाली आंदोलन व कृपाण

सिक्ख साम्राज्य को समाप्त करने के लिए अपने ही गद्दार जरनैल तेजा सिंह, लाल सिंह तथा डोगरा गुलाब सिंह ने अंग्रेज़ों के साथ मिली भक्त कर के अपनी ही सेना की बारुद्ध की पेटियों में बारूद्ध में रेता तथा सरसों के बीज मिला दिये तो सिक्ख सैनिकों ने धोखा होने पर अपनी तीन फुटी कृपाण (तलवार) से अनेकों शत्रुओं को मोत के घाट उत्तर दिया। भले ही सभरावां के मैदान में सिक्खों की पराजय हुई परन्तु शत्रु को भी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जब अंग्रेज़ ने पंजाब पर कब्जा किया तो उसे सिक्खों की कृपाण से हर समय भय लगा रहता। अतः उन्होंने कृपाण पर भी अन्य अस्त्र – शस्त्रों की तरह प्रतिबन्ध लगा दिया। परन्तु सिक्खों में कृपाण एक धार्मिक आस्था के अनुसार उनका परम्परा गत पूज्निय शस्त्र है जिसे धारण करना अनिवार्य है। बस यहीं से कृपाण पहिनने की स्वतन्त्र का संग्राम प्रारम्भ हो जाता है।

अंग्रेज़ो ने लम्बी कृपाण धारण करने वाले सिक्खों पर बहुत दण्ड लगाये, कई सिक्खों पर मुकदमे चलाए और उनकों लम्बी – लम्बी अवधी की कैद सुनाई गई परन्तु वह सिक्ख मासिकता में कोई परीवर्तन न ला सके बल्कि स्थान – स्थान पर लम्बी – लम्बी कृपाण धारी दिखाई देने लगे। अंत में अंग्रेज़ों ने धार्मिक प्रदर्शनों के समय कृपाण धारण करने पर छूट दे दी और कृपाण धारण करने के कुछ नियम बनाये। उन्होंने 9 इन्च फल (ब्लेड) वाली कृपाण धारण करने की अनुमति प्रदान कर दी। परन्तु सिक्ख लोगों का विश्वास था कि 'जितना बड़ा सरदार उसकी उतनी बड़ी कृपाण'। इस पर तनाव ज्यूं का त्यूं बना रहा। अंग्रेज़ों ने तलवार और कृपाण का अलग – अलग शस्त्र मान कर उनको अलग – अलग परिभाषित किया। परन्तु सिक्खों का कहना था कि तलवार का ही प्रायवाची शब्द कृपाण है अतः इस का आकार 9 इंच निरधारित नहीं किया जा सकता।

अंग्रेज़ तो सिक्खों को प्रसन्न करने के लिए यह दलील स्वीकार करने को तैयार थे। उन्होंने 25 जून 1914 को एक अध्यादेश पारित कर के कृपाण को दूसरे अस्त्र – शस्त्र के नियमों से अलग कर दिया और सभी प्रकार के प्रतिबन्ध समाप्त कर दिये। क्यों कि वह सिक्ख सेना की वीरता से बहुत प्रभावित थे जो उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध में दिखाई थी परन्तु बिड़म्बना यह कि उन्हीं दिनों विदेशों से लोटे गद्दर पार्टी के सदस्य लगभग सभी सिक्ख थे जिन्होंने भारत में अलग – अलग छावनिया के सैनिकों को एक साथ विद्रोह करने के लिए तैयार किया था। इस कारण अंग्रेज़ सरकार दुविधा में थी कि सिक्खों के साथ कैसे व्यवहार किया जाये एक तरफ देश के अन्तर कुछ सिक्ख संस्थाएं – जैसे सिंघ सभा तथा चीफ खालसा दीवान अंग्रेजों से बहुत सहयोग करते थे और वे अंग्रेजों को प्रसन्न करने का मार्ग ही चुनते थे उन्होंने कभी भी टक्कराव का मार्ग नहीं अपनाया था। इस के विपरीत शिरोमणी कमेटी तथा शिरोमणी अकाली दल हर समय सरकार के साथ तनाव बनाये रखते थे। भले ही इन के अंदोलन धार्मिक तथा अहिंसक थे परन्तु इन्होंने अंग्रेज़ सरकार को विश्व भर में बदनाम करने में कोई कोर – कसर नहीं छोड़ी थी। इस के साथ ही अंग्रेज़ों द्वारा निहत्थे आंदोलनकारियों की बिना कारण पीटाई तथा गोलियों से हत्याओं को देखते हए । एक नई हिंसक संस्था बब्बर अकाली भी प्रतिशोध की भावना से मैदान में कूद पड़ी थी जिन्होंने अंग्रेज़ों को अतांकित कर रखा था।

ऐसी परिस्थितियों में अंग्रेज़ सरकार ने कृपाण के प्रश्न को कभी भी दृढता से नहीं सुलझाया वह स्वयं कदम – कदम पर विचिलित रही। जो कानून वह स्वयं पारित करते थे उसी पर स्वयं ही व्यवहारिक रूप प्रदान करने में सुछिड नहीं होते थे।

राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा)

स्वतन्त्रता आंदोलन में कांग्रेसी नेताओं ने स्वतन्त्र भारत के लिए एक राष्ट्रीय ध्वज (झंडा) तैयार किया। जिसे उन्होंने तिरंगा नाम दिया। इस ध्वज में हरा रंग सब से ऊपर बीच में सफेद तथा नीचे लाल रंग था। ठीक बीच में गहरे नीले रंग का चरखा था। इस झंडे के रंगों की व्याख्या अलग – अलग की जा रही थी। भावार्थ यह कि हरा रंग मुस्लिम लोगों का, सफेद ईसाइयों का और लाल रंग हिन्दूओं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

का प्रतिनीधित्व करता था। इस पर अकाली नेताओं ने सिक्खों के प्रतिनिधित्व के लिए उसमें केसरी रंग सम्मिलित करने का आग्रह किया। महात्मा गांधी इस बात को टूकाना चाहते थे परन्तु शिरोमणी अकाली दल के प्रधान खड़क सिंघ जी इस बात पर अड़ गये कि हम आईदा किसी आंदोलन में भी भाग नहीं लेंगे। जिसमें हमारा प्रतिनीधित्व करता झंडा न हो। यदि आप हमें साथ रखना चाहते हैं तो हम अपने केशरी निशान साहिब की छत्तर छाया में ही भाग लेंगे अन्यथा नहीं। विवशता में गांधी ने बहुत से बहाने बनाये कि दस वर्षों से यही तिरंगा हमारे साथ है हमारी इस में भावनाएं जुड़ी हुई हैं। मैं अकेला कोई निर्णय नहीं ले सकता इस बात के लिए समस्त कांग्रेस कमेटी का अध्यवेशन होगा तो इस पर विचार –गोष्ठी होगी इत्यादि।

सभी कांग्रेसी नेता तथा मुस्लिम लीग इत्यादि जानते थे कि अकाली नेताओं की बात में तथ्य है और उनको नाराज़ करना अपना दहिना हाथ काटना है क्यों कि अकाली अहिंसक आंदोलन ने पूरे विश्व में अपनी धाक बिठा ली थी। इन के सहयोग बिना कांग्रेस के कई प्रदर्शन तथा आंदोलन विफल हो चुके थे।

अगस्त 1931 ई० में कांग्रेस कमेटी ने अकालियों की बात को स्वीकार करके लाल रंग के स्थान पर केसरी रंग तिरंगे में सम्मिलित कर लिया। इसपर गांधी इत्यादि ने तीनों रंगों की नई व्याख्या बना ली।

गांधी का कथन था केसरी रंग वीरता का प्रतीक है। सफेद रंग शान्ति का प्रतीक है और हरा रंग विश्वास और विकास को दर्साता है।

सन् 1942 ई० में कांग्रेस ने निर्णय लिया कि लाहौर नगर के किले पर 'यूनियन जैक' अंग्रेज़ों के झंडे के स्थान पर तिरंगा लहराया जाये तो सभी ने सहमति दे दी। परन्तु इस कार्य को कौन सम्पूर्ण करेगा? प्रश्न बन गया। इस पर अकाली नेता मास्टर तारा सिंघ जी ने कहा तिरंगे के ऊपर हरा रंग है अत: यह कार्य मिस्टर जन्नाह करेंगे। जिन्ना को मालूम था लाहौर के सरकारी किले पर 'युनियन जैक' को उतार कर तिरंगा लहराना मौत को दावत देनी है। अंग्रेज़ उसी क्षण ऐसे व्यक्ति को जो अंग्रेज़ सरकार को खुलेआम चुनौति देता हो मौत के घाट उतार देंगे। तब मिस्टर जिन्ना के उत्तर दिया – तारा सिंघ जी आप अपना केसरिया रंग ऊपर कर लें और यह तिरंगा आप ही किले पर लहरायें। मास्टर तारा सिंघ उसी क्षण उस का प्रस्ताव मान गये और उन्होंने कहा आज – अभी से तिरंगे को उल्टा कर देते हैं इस प्रकार हारा रंग नीचे हो जायेगा ओर केसरी ऊपर और मैं अपने कहे अनुसार यह कार्य कर दिखाऊगा।

इस कार्य के करने के लिए उन्होंने समस्त अकाली वलिन्टयरों को एकत्र होने के लिए आमंत्रित किया उस दिन लगभग पचास हजार अकाली वर्कर किले के बाहर एकत्र हुए तब उन्होंने 'युनियन जैक' को उतर कर तिरंगा लहरा दिया। अंग्रेज़ शांत थे। क्योंकि वे विचार रहे थे कि आज नहीं तो कल सत्ता इन्हीं लोगों को देनी ही है अब झगड़ा काहे का है। दूसरी बात यह थी कि इतनी बड़ी विशाल अकाली वालिन्टियरों की संख्या देखकर वे स्तब्ध रह गये।

सरदार भक्त सिंह जी

सरदार भगत सिंह जी के पूर्वज खटकड़ कलां ज़िला जलंधर के निवासी थे। आप जी के चाचा सरदार अजीत सिंह बहुत बड़े क्रांतिकारियों में गिने जाते थे। उन्होंने सन् 1906 ई. में 'बार' के किसानों के अंदोलन का नेतृत्व किया। इसी कारण 9 मई 1907 को लाला लालपत राय तथा अजीत सिंह को

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अंग्रेज़ों ने ग्रिफतार करके मांडले जेल में बन्दी बना लिया। सरदार भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह जी उन दिनों आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता थे। उन्होंने भी अपने भाई अजीत सिंह की ग्रिफतारी के पश्चात बहुत तीव्रगति से अंदोलन को आगे बढ़ाने का कार्य किया अतः आप के भी ग्रिफतारी के वांरट जारी हो गये। आप जी विवशता में नेपाल चले गये। महाराजा नेपाल ने आप को अंग्रेजों को सोप दिया। सरदार किशन सिंह जी ने छोटे भाई सरदार स्वर्ण सिंह जी को भी अंग्रेज़ों ने उन की गतिविधीयों के लिए लाहौर की जेल में कैद कर दिया। ऐसा प्रस्थितियों में भक्त सिंह जी की माता लायलपुर नगर चक्क नम्बर 105 में निवास करने लगी यहीं उन्होंने एक बालक को जन्म दिया। इस बालक के जन्म के कुछ दिनों के भीतर ही सरदार किशन सिंह, अजीत सिंह तथा स्वर्ण सिंह रिहा होकर घर लोट आये। अतः नये बालक को भाग्यशाली जान कर दादी माँ ने बच्चे का नाम भागांवाला रख दिया। धीरे – धीरे यही नाम भक्त सिंह के नाम में परिवर्तित हो गया।

(1907 – 1931) शहीद भक्त सिंघ जी ने भाई साहिब रणधीर सिंघ जी से प्रेरणा पा कर पुनः सिक्खी स्वरूप धारण कर लिया था। उन का लाहौर जेल में मृत्यु दण्ड से पहले का एक चित्र।

सन् 1914 – 15 ई. में भक्त सिंह जी जलंधर के एक कस्बे बांगा में प्राइमरी की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे तभी आप बहुत जागृत विद्यार्थीयों में गिने जाते थे क्योंकि घर का वातावरण का प्रभाव था। उन दिनों गद्दर पार्टी का अंदोलन विफल हुआ तथा कामागाटामारू जहाज़ के निर्दोष यात्रियों की अंग्रेज़ों ने बड़ी करूरता से हत्याएं की, जो पकड़े गये उन्हें फांसी पर लटकाया गया इन दुर्घटनाओं का बालक भक्त सिंह के हृदय पर बहुत गहरा प्रभाव हुआ।

जैसे ही भक्त सिंह जी ने किशौरावस्था में पदार्पण किया आप का परिवार गांव को त्याग कर लाहौर नगर बस गया। यही आप ने लाहौर के डी. ऐ. वी. कॉलेज फिर नैशनल कॉलेज में उच्च शिक्षा प्राप्त करनी प्रारम्भ कर दी। उन दिनों स्थानीय प्रिंसीपल लाला छबील दास जी थे। जो कि हृदय से गुलामी की जंजीरे तोड़ देना चाहते थे। जो विद्यार्थी उन के सान्निध्य में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे वह उन में देश भक्ति की भावना की ज्वाला जला देते थे। 1923 ई. में भक्त सिंह ने बी. ए. की शिक्षा उतीर्ण की उन दिनों अहिंसक अकाली अंदोलन शिखर पर था। शांत निहत्थे अकालियों पर अत्याचारों की आंखों देखी दासताने घर – घर गूंज रही थी। समस्त देश अंग्रेज़ों की भर्त्सना कर रहा था। दूसरी तरफ बब्बर अकाली इस करूरता का प्रतिशोध लेने के लिए तत्पर थे। यह क्रांतिकारी वातावरण युवक भक्त सिंह के लिए पर्याप्त था कि वह क्रांतिकारियों की मण्डली में प्रवेश करें। भक्त सिंह के अभिवाकों ने भक्त सिंह को गृहस्थाश्रम में प्रवेश करवाने का प्रयास किया परन्तु भक्त सिंह ने सहमति नहीं दी वह जानते थे कि मेरा जीवन केवल देश के लिए है। अतः वह घर त्याग कर कानपुर चले गये जहां उन्होंने एक हिन्दी समाचार पत्र 'प्रताप' में एक पत्रकार के रूप में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। इस समाचार पत्र के सम्पादक श्री गणेश शंकर विद्यार्थी जी थे। यह महान व्यक्तित्व का व्यक्ति क्रातिकारी कांग्रेसी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

विचारों वाला था। इन की निकटता से भक्त सिंह के मन पर देश भक्ति का गहरा रंग चढ़ गया। तब आपने अपने लिए एक नये नामकर्ण की युक्ति सोची और अपना नाम बलवंत सिंह प्रसिद्ध कर दिया। यही भक्त सिंह की भेंट श्री दत्त से हुई जो कि आपके गहरे मित्र बन गये।

सरदार भक्त सिंह के मन – मस्तिष्क पर रूस में हुई क्रांति का गहरा प्रभाव था। अत: उन्होंने अपने उगर विचार धारा वाले साथियों के साथ मिलकर एक संस्था की स्थापना की जिसका नाम हिन्दूस्तान साशलिसट रिपब्लिक ऐसोसीएशन रखा। आप इस के प्रमुख के रूप में कार्यकर्ता थे। क्रांतिकारी कार्यों के लिए धन की अति आवश्यकता थी। अत: धन प्राप्ति के लिए सरकारी खजाने को रेल गाड़ी से लूटने का कार्यक्रम बनाया गया। जिस के असफलता पर तीन देश भक्तों का फांसी की सजा हुई भक्त सिंह तथा अन्य साथियों ने उन्हें समय रहते छुड़वाने का असफल प्रयास भी किया इन ही दिनों अक्तूबर 1927 में एक देसी बम्ब कानुपर में फट गया। भक्त सिंह को पुलिस ने ग्रिफतार कर लिया परन्तु बम्ब को स्थानीय अतिषबाडी करना बताकर किसी प्रकार भक्त सिंह पुलिस चुगल से छुट गया।

इस प्रकार भक्त सिंह उत्तर प्रदेश त्याग कर पंजाब लोट आये और यहां फिर से अपने लक्ष्य को मद्देये नज़र रख कर कार्यरत हो गये। यहां इन के साथी थे सुखदेव तथा भगवती चरण। डा. गया प्रसाद को पंजाब बुला लिया गया जहां उन्होनें अपना नाम बदल कर के. एस. निगम कर लिया और फीरोज़पुर में कैमिस्ट की दुकान खोल ली। इस दुकान की आड़ में पार्टी कर्त्ताओं को मिल बैठने का स्थान उपलब्ध हो गया तथा दुकान की आय से पार्टी के खर्च चलने लगे। सब से बड़ी बात बम्ब बनाने का रॉ – मैटीरियल उपलब्ध होने लगा।

इन दिनों देश भर में अलग – अलग स्थानों पर क्रांतिकारी गतिविधियां ज़ोरो पर थी। दिल्ली के एक गुप्त स्थान पर समस्त देश से क्रांतिकारी इस सम्मेलन में भाग लेने आये और उन्होंने अपने को एक सूत्र में पिरोइआ यह दिन था 9 सितम्बर 1928 ई. । इस केन्द्रिय कौंसल में पंजाब के प्रतिनिधि के रूप में सरदार भक्त सिंह को लिया गया तब इन की आयु केवल 20 वर्ष ही थी। इस कौंसल ने निर्णय लिया कि किसी व्यक्ति विशेष की हत्या अथवा डाका इत्यादि करने से पहले प्रधान की सहमति अवश्यक होगी।

इस संस्था ने निर्णय लिए कि साईमन कमिशन का विरोध किया जाये तब अंग्रेज़ सरकार ने विरोध प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। जब कमिशन लाहौर पहुंचा तो जनता ने दफा 144 की धारा का उल्घन करते हुए प्रदर्शन किया और नारे लगाये और कहा – साईमन कमिशन वापस जाओ इस पर अंग्रेज़ अधिकारी सांडरस ने स्वयं लाठियों से देश भगतों को पीटा। इस पिटाई में लाला लाजपात राय घायल हो गये और वह कुछ दिन पश्चात शरीर त्याग गये।

स. भगत सिंघ एक अंग्रेज़ पुलिस अधिकारी को लाला लाजपत राय की हत्या के रोष में गोली मारते हुए।

लाला जी की मृत्यु पर सारे क्रांतिकारियों में रोष की लहर दोड़ गई लाला जी की हत्या का बदला लेने की

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

क्रांतिक्रारियों ने योजना बनाई और अपराधी सांडरस को मार गिराने का निर्णय ले लिया। वे पुलिस स्टेशन के निकट उसकी खोज में पहुंचे। जैसे ही सांडरस मोटर साईकल पर सवार होकर बाहर निकला राजगुरू ने उस पर गोली – चलाई । सांडरस घायल हुआ यह देखकर भक्त सिंह ने भी ठीक निशाना साध कर दूसरी गोली उस पर चला दी। जिस से वह गिरकर ठंडा हो गया। सांडरस का अंगरक्षक चनण सिंघ क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए उनके पीछे भागा। इस पर भक्त सिंह ने उस पर भी गोली चला दी वह भी वहीं ठंडा हो गया।

पुलिस को भक्त सिंह पर पूरा शक था वे लोग भक्त सिंह की खोज में जुट गये भक्त सिंह की ऐसी पस्थितियों में गुप्तवास के लिए अपना वेष – भूषा बदलने के लिए अपने केशों को त्यागना पड़ा। परन्तु उसे अपनी गलती का एहसास था। भाई साहिब रणधीर सिंह जी की जब उस से भेंट हुई तो उसने प्रायश्चित करते हुए पुनः केशों को धारण किया और जूड़ा कर के पगड़ी बंधने लगे परन्तु उनके केश अभी छोटे ही थे जब उनको मृत्यु दण्ड दिया गया।

सांडरस की हत्या करने के पश्चात भक्त सिंह दिल्ली निकल गये। वहां उन्होंने नई नीति अपनाई साईमन कमिशन पर बम्ब फेंकने के बदले । केवल एक विस्फोट करने के विचार में पटाखा तैयार किया जिस से कोई जानी अथवा माली क्षती न हो, उसे उन्होंने असैम्बली हाल में बजा दिया। क्रांतिकारियों के दल का निर्णय था कि अब भाग लिया जाये। परन्तु भक्त सिंघ ने इस विचार को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने असैम्बली हाल में नारे बाजी की और कुछ अंग्रेज़ी में छापे हुए पर्चे फेंके तथा स्वयं को ग्रिफतार करवाने के लिए हाथ ऊपर कर के पुलिस को सोप दिया। पुलिस ने भक्त सिंघ तथा गुरु दत्त को अगल – अगल कोठरियों में कैद रखा और बहुत से क्रांतिकारियों के भेद जानने चाहे परन्तु उन्होंने कोई विशेष सफलता न मिली। भगत सिंह के पिता जी ने भक्त सिंघ का मुक्कदमा लड़ने के लिए एक वकील निश्चित किया परन्तु भक्त सिंह अपने प्राणों की आहुति देना चाहता था अतः उसने वकील स्वीकार न किया और सत्य कह कर अपनी देशभक्ति का परिचय देते हुए उन्होंने अदालत में इनकलाबी भाषण दिये। इन भाषणों का भावार्थ था कि अब भारतीय जागृत हो गये हैं आज नहीं तो कल अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना ही पड़ेगा। इस कार्य के लिए भारतीय कोई भी मूल्य देने को तैयार है। अब अंग्रेज़ों के जूल्मों खित्म को दमन चक्र कुछ भी नहीं कर पायेगा इत्यादि।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

15 अप्रैल 1929 ई. को पुलिस ने लाहौर नगर के एक मकान पर छापा मार कर सुखदेव जय गोपाल तथा किशोरी लाल को ग्रिफतार कर लिया। पुलिस की मार के भय से जय गोपलाल ने बहुत से इनकालाबियों के भेद बता दिये। जिस को अधार बनाकर 123 क्रांतिकारियों को विभिन्न क्षेत्रों से ग्रिफतार कर लिया गया इसके साथ ही बम्ब बनाने का कारखान तथा काग़ज – पत्र पुलिस के हाथ आ गये। इसी आधार पर लाहौर षड्यन्त्र केस तैयार किया गया।

भक्त सिंह व दत्त ने दिल्ली जेल में भद्दे व्यवहार तथा गंदे खाने के विरोध में 15 दिन भूख हड़ताल रखी। इस प्रकार उन के लिए देश भर में सहानुभूति प्रदर्शन हुए। इस बीच जतिन्द्रनाथ दास 62 दिन भूख हड़ताल पर रहे फिर शरीर त्याग कर शहीदों की सूची में सम्मिलित हो गये।

7 अक्तूबर 1929 को मुक्कदमें का निर्णय हुआ। जिस में भक्त सिंघ, राजगुरु तथा सुखदेव को फांसी द्वारा मृत्यु दण्ड दिया गया। 7 अन्य क्रांतिकारियों को काले पानी में आयु भर के लिए कारावास, बाकियों को लम्बी केद की सजा सुनाई गई।

23 मार्च 1931 ई. को भक्त सिंघ, राजगुरू व सुखदेव को मृत्यु दण्ड दिया गया उनके शवों की सतलुज नदी के किनारे जिला फिरोज़पुर में अंत्येष्टि कर दी गई और राख नदी में बहा दी गई।

सरदार सेवा सिंघ ठीकरीवाला

शहीद सरदार सेवा सिंघ जी स्वतन्त्रता संग्राम के एक शूरवीर योद्धा तथा सच्चे जनसेवक थे। जिन्होंने अपना समस्त जीवन जन – साधारण को न्याये दिलवाने तथा हत्याचारियों के विरुध चेतना लाने के संघर्ष में न्यौछावर कर दिया।आप को जेल की कड़ी यातनांए भी अपने लक्ष्य से हटा न सकी।

सरदार सेवा सिंह जी का जन्म अगस्त 1878 ई० को सरदार देवा सिंघ जी के गृह ठीकरीवाला क्षेत्र में हुआ। आपके पिताजी रियासत पटियाला के प्रमुख अधिकारियों में कार्यरत थे। आप का बाल्यकाल बहुत सी विलासता पूर्ण ऐश्वर्य में व्यतीत हुआ। आप की शिक्षा – दीक्षा पटियाले जिले में हुई। जब आप योग्य पुरुष हुए तो आप को भी पटियाला में ही उच्च पद पर नियुक्त कर लिया गया। तब

मास्टर तारा सिंघ जी सन् 1930 में अंग्रेजों के विरुद्ध पठानों की सहायता के लिए अकालतख्त साहिब से पेशावर के लिए विदाई लेते हुए।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

किसी भी हृदय में यह विचार नहीं आ सकता था कि यह ठाठ – बाठ से जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति परोपकार के लिए सब कुछ त्याग कर कड़ी यातनांए झेलने को तैयार हो जायेगा और अपना जीवन भी उन लोगों के लिए बलिदान में लगा देगा जो अन्याय की लड़ाई लड़ रहे है।

जब आप के पिता जी का देहांत हुआ तो आप पटियाला से ठीकरी वाला अपने गांव आ कर निवास करने लगे। उन दिनों 'सिंघ सभा लहर' चल ही थी। आप को भाई अर्जुन सिंघ जी ने इस लहर की विशेषता बताई कि यह चेतना लहर है जिसके द्वारा जन – साधारण को अपने अधिकारों के लिए जागृति किया जाता है जिससे हम सभी पराधीनता से सदैव के लिए छुटकारा प्राप्त कर सकें।

इस लहर से प्रभावित होकर अपने सर्वप्रथम अपने क्षेत्र ठीकरीवाला में एक स्कुल बनवाया जिस का सारा खर्च स्वयं उठाया। फिर अपने समाज सुधार के कार्यो में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। अपने मद्य निषेध के लिए अभियान चलाया और युवकों को अमृत पान (धारण) करने के लिए प्रेरणा आरम्भ किया।

जब गुरुद्वारा सुधार लहर चली तो उन दिनों आपकी सेवाएं को ध्यान में रखते हुए आप को शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का कार्यकर्त्ता बनाया गया फिर आप को शिरोमणी अकाली दल का उप प्रधान नियुक्त किया गया। जब महंतों से गुरुधाम आज़ाद करवा लिये गये तब आप को गुरुधाम मुक्तसर का मुख्य प्रबन्धक बनाया गया।

सरदार सेवा सिंघ जी ने पटियाला रियासत के विभित्र भागों में अकाली दलों की स्थापना की। जब अंग्रेज़ सरकार ने नाबा के राजा ऋपुदमन सिंह को उनकी रियासत से हटाया तो अपने भी पटियाला क्षेत्र में 'नाबा डे' मनाया। बस यहीं से उनका पटियाला के महाराजा से मतभेद उत्पन हो गया। जब इस आंदोलन को लेकर मोर्चा 'गंगसर जैतो' प्रारम्भ हुआ तो उन्होंने इस में बहुत उत्साह से भाग लिया। इस पर पटियाला के महाराजा भुपिंदर सिंह ने उन्हें अपने पास बुलाया और उन्हें बहुत लालच दिये तथा धमकाया भी कि आप अकाली आंदोलन त्याग कर हमारे साथ मिल जाये किन्तु सरदार सेवा सिंघ ठीकरीवाला कब इन तुछ वास्तुओं के प्रभाव में आने वाले थे उन्होंने राजा भूपिंदर सिंघ को स्पष्ट शब्दों में कहा – मैं किसी भी कीमत पर अकाली आंदोलन को त्याग नहीं सकता क्यों कि वह लोग समाज – सुधार न्याय इंसाफ की लड़ाई लड़ रहे हैं। तब महाराजा पटियाला ने उन्हें गिफतार करके लाहौर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जेल में उनके अन्य साथियों के पास भेज दिया। जब वह लाहौर जेल में ही थे तभी उन्हें उनकी अनुपस्थिति में अकाल कालेज मस्तूआना की प्रबन्धक कमेटी का प्रधान तथा पटियाला रियासत की अकाली दल का जत्थेदार नियुक्त कर दिया गया।

सन् 1925 ई० में जब गुरुद्वारा ऐक्ट बनाया गया तब कुछ सिक्ख नेताओं के कुछ शर्तें स्वीकार करके जेल से बाहर आना मान लिया परन्तु कुछ नेताओं ने कहा कि हम बिना शर्त के जेल से ही बाहर आयेंगे। सरदार सेवा सिंह जी उनमें से थे जो बिना शर्त बाहर आना चाहते थे अतः वह जेल से नहीं लोटे। जब सरकार ने इनको बिना शर्त रिहा किया तब जेल से बाहर पटियाला पुलिस ने फिर से गिफ्तार कर लिया। वहां उन पर फिर से दवाब बनाया गया कि वह शिरोमणी अकाली दल अथवा पंथक कार्यो में भाग न ले परन्तु सेवा सिंघ जी सुदृढ़ इरादे के स्वामी थे उन्होंने पटियाले के महाराजा का कोई भी प्रस्ताव स्वीकार न किया अतः उन्होंने जेल में ही रखा गया, वहां उन्हें बहुत यातनाएं दी गई। भोजन बहुत ही निम्न स्तर का दिया जाता था। अतः आपने भूख हड़ताल कर दी। जब आप का स्वस्थ्य बहुत बिगड़ गया तो आप को 3 वर्ष के बाद रिहा कर दिया गया।

शहीद उधम सिंघ (1899 – 1940) इस युवक ने जब अमृतसर नगर के जलियां वाला बाग में अंग्रेजों द्वारा निरापराध लोगों का हत्या कांड देखा तो उन्होंने निर्णय लिया कि पंजाब के राज्यपाल माईकल उडवाइर को उसके किये का दण्ड देना है। इस प्रकार उन्होंने योजना बद्ध विधि से केकस्टन हाल (लंदन) की सभा में उसे गोली मार दी और स्वयं मृत्यु दण्ड के लिए गिफ्तार हो गये।

वह पहले से ही तीन संस्थाओं के प्रधान पद पर नियुक्त थे। जब जेल से बाहर आये तो उन्हें पंजाब प्रजा मण्डल का भी प्रधान चुन लिया गया। अब आप ने निर्भय होकर जन – सेव में कार्य करने प्रारम्भ कर दिये। इस संघष में आपने पटियाला के महाराजा की तरफ से प्रजा पर हो रहे हत्याचारों पर ध्यान केन्द्रित कर आंदोलन चलाया और नारा दिया भूपिंदर सिंघ गद्दी त्यागों इस पर स्थानीय राजा ने उन्हें फिर से अपने पास बुलाया और अनेकों दवाब डाले कि वह उसके रास्ते से हट जाये अन्यथा जीवन कारावास में ही व्यतीत होगा। परन्तु जनसेवक ने किसी भी धमकी की कोई परवाह नहीं की। तब उन्हें फिर से गिफ्तार करके जेल में भेज दिया। वहां उन्हें बहुत यातनाएं दी गई। भोजन भी गंदा दिया जाता था। तब आपने भूख हड़ताल कर दी। जब आप का स्वस्थ्य

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बहुत बिगड़ गया तो आप को डाक्टरों ने गुलूकोस इत्यादि दिया परन्तु आप नश्वर शरीर त्याग के प्रभु चरणों में जा बिराजे।

सरदार ऊधम सिंघ सुनाम

सरदार ऊधम सिंघ वह वीर योद्धा बली पुरुष था, जिसने अमृतसर के जलियां वाले बाग के शहीदी काण्ड के कर्त्ता सर माईकल ऐडवाइर को लम्बे समय बाद लंडन के एक सम्मेलन में घोषणा करते हुए गोली मार कर कहा कि मैंने आज इस हत्यारे से खून का बदल खून से ले लिया है।

इस महाबलिष्ठ पुरुष का जन्म पंजाब के मालवा क्षेत्र के प्रसिद्ध नगर सुनाम में हुआ। बाल्यकाल में आपजी स्वाभिमानी प्रविर्ती के स्वामी थे। जब आपने गद्दर पार्टी के आज़ादी अंदोलन की गतिविधि यां के विषय में सुना और इस अंदोलन के विफल होने के कारणों को समझा तो आप का हृदय क्रांतिकारियों के पक्ष में उन की सहायता करने को छट – पटाने लगा परन्तु अभी आप किशौर अवस्था को ही प्राप्त हुए थे। इन्हीं दिनों अंग्रेज़ों द्वारा अत्याचारों के किस्सें में बजबज घाट पर कामा गाटा मारु जहाज से उतरते हुए निर्दोष यात्रियों के बिना कारण गोलियों मार देना और झूठी अफवाह उड़ानी कि वे यात्री भारतीय पंजाबी नहीं थे। बल्कि समुद्री डाकू थे, की घटना ने आपके हृदय में अंग्रेज़ों के प्रति घृणा उत्पन कर दी। तभी एक नई दुर्घटना आप के समक्ष हुई। सन् 1919 की 13 अप्रैल को बैसाखी वाले दिन जन – साधारण एक जलसे में सम्मिलित होने पहुंचे। जहां वे अपने गिफतार नेताओं के विषय में विचार – चर्चाएं तथा उन्हें रिहा करवाने की युक्ति पर गोठियों का अयोजन कर रहे थे। अंग्रेज़ सरकार ने शांतिमय जलसों पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया था। अतः पंजाब के राज्यपाल माईकल ऐडवायर ने स्वयं अपने नेतृत्व में वहां पहुंच कर निहत्थे जन साधारण पर गोलियों की वर्षा करवा दी और असंख्य निर्दोष व्यक्तियों को सदा की नींद सुला दिया और घोषण कि अंग्रेज़ सरकार का हुक्म न मानने वालों को इसी प्रकार कुचल दिया जाया करेगा।

इस जघन्य हत्या काण्ड ने समस्त देश में अंग्रेजों के विरुद्ध तहलका मचा दिया । जगह – जगह बुद्धिजीवी इस अंग्रेजी जुल्म से देश को स्वतन्त्र करवाने के लिए आपस में परामर्श करने लगे। इस प्रकार हिंसक आन्दोलन के लिए भावी पीढ़ी के लिए धतारल तैयार हो गया। सरदार ऊधम सिंघ उस समय किशौरावस्था में थे जिन्होंने इस हत्या काण्ड को अपनी आँखों से देखा और प्रतिज्ञा की कि यदि प्रभु

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ने चाह तो मैं इस हत्या काण्ड के अपराधी से बदल अवश्य ही लूगा। सन् 1923 ईस्वीं में अकाली अंदोलन जो कि आहिंसक था चर्म सीमा पर पहुंचा तो उस समय अंग्रेजों द्वारा इस अंदोलन को कूचलने की विधी में सैकड़ों देश भगतों व धर्मी पुरुषों को अंग्रेज़ी सरकार ने पीट – पीट कर नकारा कर दिया । यह देखकर समस्त भारत में अंग्रेज़ो की घोर निंदा होने लगी। दूसरी तरफ गर्मविचार धारा वाले युवकों को अपनी बात ठीक मालूम हुई कि हिंसा का उत्तर हिंसा से देकर ही भारत स्वतन्त्र हो सकता है। इस बात को साकार रूप दिया बब्बर अकाली अंदोलन ने। इस संस्था के युवकों ने अंग्रेंजों को चुनौतियां दी और वह कार्य कर दिखाये जो असमभव समझे जाते थे। इस समय सरदार ऊधम सिंह जी का संकल्प रंग लाया उन्हें अकाली संता सिंह जी मिल गये। संता सिंह जी ने युवक ऊधम सिंह बब्बर अकाली दल का सदस्य बनना चाहते थे परन्तु इन लोगों से भेंट होनी इतना सहज कार्य न था। आखीर एक दिन सरदार ऊधम सिंज जी की भावनाओं का अध्ययन किया और उन्हें बब्बर अकाली अंदोलन के प्रचार – प्रसार का कार्य सौपा। परन्तु जल्दी ही घर के भेदीओं ने इस लहर को समाप्त करवा दिया। इस पर सरदार ऊधम सिंह जी ने सरदार भगत सिंह से सम्पर्क साधा और उनकी 'भारत नौजवान सभा' के कार्यकर्ता बन गये। परन्तु जल्दी ही उन्होंने अनुभव किया कि मेरा लक्ष्य माईकल ऐडवायर को दण्डित करना है इस प्रकार मेरा समय नष्ट हो रहा है वह सब कार्य छोड़ कर ऐडवाडर की खोज में लंडन पहुंच गये। वहां माईकल ऐडवायर उनके काबू न आया उस के लिए कड़े परिश्रम की आवश्यकता थी। तभी उन्हें भगत सिंह जी का पत्र मिला कि यदि वहां पर काम नहीं बन रहा तो तुम्हारी यहां सरव्त जरुरत है जल्दी लोट आओ। ऊधम सिंह संदेश प्राप्त होते ही भारत लोट आया और भगत सिंह के बताएं काम करने लगे। इस प्रकार पुलिस की निगाह उन पर टिक गई और वह गिफतार कर लिये गये। इस मुकदमे में चार वर्ष की कैद हुई। यह चार वर्ष की कड़ी कैद काट कर उधम सिंह सीधा लंडन पहुंचा वहां उन्होंने अपना नाम बदल कर राम मुहम्मा सिंह रख लिया और अपने मुख्य लक्ष्य के लिए दिन रात एक कर दिया।

इस प्रकार वह दिन 13 मार्च 1940 भी आ गया जब इस दिन इन्डिया हाउस में एक सम्मेलन था जिस में माईकल ऐडवायर ने भाषण देना था जिस में उसने डींगे हाकनी थी कि मैंने सन् 1919 में भारतीयों को कैसे कुचल डाला था। परन्तु भारतीयों की आन – शान और आत्मगोर्व को सुरक्षित रखने के लिए एक देश भगत सरदार ऊधम सिंह को अपना दूत बनाकर भगवान ने भेज दिया। जैसे ही ऐडवायर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भाषण देने लगा तभी सरदार ऊधम सिंह जी ने उसे अपनी गोलियों का निशाना बना दिया। हाउस में हा – हाकार मच गई। माईकल ऐडवायर मारा गया। कुछ लोगों ने ऊधम सिंह जी से कहा आप कपड़े बदल कर यहां से भाग जाओं परन्तु उत्तर में सरदार ऊधम सिंह जी ने कहा – मैंने जलियां वाले बाग के हत्यारे से बदला ले लिया है। कुछ ही देर में वहां पुलिस पहुंच गई वे लोग ऊधम सिंह को ग्रिफ्तार करना नहीं चाहते थे। ऊधम सिंह जी ने कहा मुझ से न डरो मैंने रिवाल्वर फैक दी है अब मेरे पास कुछ नहीं है। अंग्रेज़ों ने ऊधम सिंह से कहा – तुम हत्या करने से मुकर जाओं हम तुम्हें छोड़ देते है। इस पर ऊधम सिंह अंग्रेज़ों की नीति समझ गये कि लंडन के प्रारेगंडे ने अंग्रेज़ों को तोड़कर रख दिया है वह अब जान गये कि कोई भी जालिम अंग्रेज़ अधिकारी सुरक्षित नहीं है अतः वह इस प्रारेगंडे को झूठा साबित करना चाहते है। उस समय ऊधम सिंह जी ने अपने मूल लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने प्राणों की आहुति देनी उचित जान कर लंडन की अदालत में देशभक्ति का परिचय देते हुए एक अद्भुत भाषण दिया। जिस से सारी अंग्रेज़ सरकार हिल गई । उन्होंने विवशता में सरदार ऊधम सिंह को मृत्यु दण्ड के रूप में 13 जुन 1940 ई. को फांसी पर लटका दिया।

शहीद बचन सिंघ लोहा खेड़ा

सरदार ऊधम सिंह सुनाम ने पंजाब के मालवा क्षेत्र में बब्बर अकाली अंदोलन समय युवकों में क्रांतिकारी प्रचार किया। इस कारण बहुत से उग्र विचार धारा वाले इस संस्था के साथ कार्यरत रहने लगे। इन युवकों में लोहा खेड़ा ग्राम के सरदार भोला सिंह तथा सरदार बचन सिंह जी भी थे जिन्होंने मोर्चा गुरू के बाग में तैनात अंग्रेज़ पुलिस कप्तान बी. टी. को मौत के घाट उतार कर उससे निर्दोषों पर किये गये अत्याचारों का बदला चुकता किया और अंत में अंग्रेज़ी सरकार के चुगंल में फंसने पर मृत्यु दण्ड के रूप में फांसी स्वीकार की।

सरदार ऊधम सिंह जी अभी लंडन नहीं गये थे, उन्हीं दिनों पंजाब के मालवा क्षेत्र के क्रांतिकारियों की एक एकत्रता हुई। जिस में निर्णय लिया गया कि मोर्चा गुरू के बाग में अत्याचार करने वाले पुलिस कप्तान बी. टी. को मृत्यु दण्ड देना अति आवश्यक है जिस से अन्य पुलिस अधिकारियों को चेतावनी दी जा सके। पुलिस कप्तान बी. टी. अति विषैला व्यक्ति था वह केवल अत्याचार ही नहीं करता था। बल्कि सिक्ख गुरुजनों के प्रति गंदी अथवा अभद्र भाषा का प्रयोग भी करता था जिस से सिक्ख हृदय अति पीड़ित होते थे। सर्व प्रथम क्रांतिकारियों ने इस कप्तान को दण्ड देने का मन बनाया। इस कार्य को करने के लिए तीन युवकों ने अपने – आप को प्रस्तुत किया, इनमें सरदार बचन सिंह अग्रणी थे।

इन युवकों के पीछे पहले से ही पुलिस लगी हुई थी अतः ये लोग गुप्त वास में ही रहते थे। एक

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दिन मलेरकोटला नगर की पुलिस से आमना – सामना हो गया। उस समय पुलिस ने इनके गुप्तवास पर छापा मारा था। सरदार बचन सिंह पुलिस मुक्काबला करते हुए घायल अवस्था में गिफ्तार कर लिये गये। उनको लम्बी कैद की सजा सुनाई गई। इस बीच वह सोचने पर विवश हो गये कि यदि मैं जेल में ही सड़ता रहा तो पुलिस कप्तान बी. टी. को कौन दण्डित करेगा? जब कि यह कार्य करने का बीड़ा उसने स्वयं उठाया था। तब उन्होंने एक युक्ति से जेल से भागने का विचार बनाया। इस युक्ति को क्रियांवित करने के लिए उन्होंने कुछ अन्य इखलाकी कैदियों को विश्वास में लिया और एक संतरी की बन्दूक छीन ली बन्दूक की सहायता से अन्य संतरियों को बन्धक बनाकर एक कमरे में बन्द कर दिया और बन्दूकों सहत जेल से भागने में सफल हो गये। इस प्रकार बचन सिंघ जी ने अपने मुख्य लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित किया।

उन दिनों पुलिस कप्तान बी. टी. एक विधवा औरत हरिनाम कौर को रखेल (उपपत्नि) बना कर पटियाला रियासत के गांव चडे में एक कोठी बना कर रहने लगा था। विधवा हरिनाम कौर के ससूराल वालों को यह बात बहुत अपमान जनक लग रही थी, परन्तु वह कुछ कर नहीं पा रहे थे। हरिनाम कौर का देवर इस अपमान का बदला लेना चाहता था। इधर बचन सिंघ बब्बर किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में थे जिस के सहारे वह कप्तान बी. टी. तक पहुंच सके। 'जहां चाह वहां राह' के मुहावरे अनुसार दोनों का मिलन हुआ फिर नई – नई युक्तियों पर विचार हुआ अंत में एक युक्ति बहुत उपयुक्त सी बना ली गई।

इन दिनों कप्तान बी० टी० को सुरक्षा के लिए गार्ड मिली हुई थी वह हर समय पहरे के भीतर सुरक्षा घेरे में रहता था। उसने पुलिस थाने में रिर्पोट लिखवा रखती थी कि मुझे मेरी पत्नी के भूतपूर्व देवर काका सिंह से जान का खतरा है। इस बात का लाभ उठाते हुए क्रांतिकारियों ने पुलिस की वर्दी धारण की और काका सिंह को पकड़ कर बी. टी. की कोठी पर पहुचें और गार्ड को सूचित किया कि हम अपराधी काका सिंह को पकड़ कर लाये है। जैसे ही बी. टी. काका सिंह को देखकर उनके सामने घर के बाहर आया तभी क्रांतिकारियों ने उसे गोली मार दी। गोली की अवाज सुनकर जब हरिनाम कौर बाहर आई तो उसे भी वहीं ठंडा कर दिया गया। इस प्रकार क्रांतिकारी बचन सिंघ ने एक अद्भुत कार्य कर के सिक्ख कौम के नाम को चार – चान्द लगा दिये इस काण्ड के पश्चात जल्दी ही बचन सिंह जी पुलिस की पकड़ में आ गये। मुक्कदमें में उन्हें फांसी की सजा हुई तथा अन्यों को उमर कैद।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor